प्रकाश पंडित द्वारा संपादित

लोकप्रिय शायर और उनकी शायरी

नया संस्करण: सह-संपादक सुरेश सलिल

इक़बाल

ग़ज़लें ❖ नज़्में ❖ शे'र ❖ रुबाइयाँ ❖ जीवनी

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले

ख़ुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है

परिचय

हज़ारों साल नर्गिस[1] अपनी बेनूरी[2] पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर[3] पैदा

इक़बाल का यह शे'र संसार के अन्य महापुरुषों की तरह, जिन्होंने मनुष्य तथा मनुष्य की महानता के गीत गाए, तथा उसे पतन की दलदल से निकालकर आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा कर्म एवं संग्राम के पथ पर लगाने का प्रयत्न किया, स्वयं इक़बाल पर भी ठीक बैठता है। हज़ारों साल का दीर्घ विराम न सही, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि 'दीदावर' बड़ी मुश्किल से पैदा होता है, और जब भी वह पैदा होता है दीर्घ विरामों की टूटी श्रृंखलाएं जुड़ जाती हैं।

उर्दू और फ़ारसी शायरी के चमन का यह 'दीदावर' 1875 ई. में स्यालकोट (पंजाब) में पैदा हुआ। पुरखे कश्मीरी ब्राह्मण थे जिन्होंने तीन सौ वर्ष पूर्व इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था और कश्मीर से निकलकर पंजाब में आ बसे थे। पिता शेख़ नूर मोहम्मद का स्यालकोट में छोटा-सा व्यवसाय था लेकिन सहृदयता और सत्कर्मों के कारण बड़ा नाम था। अता मोहम्मद और मोहम्मद इक़बाल—दोनों पुत्रों को उन्होंने उर्दू, फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी की उच्च शिक्षा दिलवाई। अता मोहम्मद इक़बाल से चौदह वर्ष बड़े थे, इसलिए शिक्षा समाप्त कर वे तो मशीनों के इंजीनियर बन गए, लेकिन मोहम्मद इक़बाल, जिन्हें मानव-मस्तिष्क का इंजीनियर बनना था, स्यालकोट से एफ.ए. करने के बाद लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। स्यालकोट में उन्हें मौलवी सय्यद मीर हसन जैसे उस समय के माने हुए विद्वान से लाभान्वित होने का अवसर मिला था जिन्होंने उनके मन में पूर्वी साहित्य तथा अन्य विधाओं के प्रति विशेष आदर उत्पन्न कर दिया था। लाहौर पहुँचे तो प्रोफ़ेसर आर्नल्ड जैसे विख्यात दार्शनिक का पथ-प्रदर्शन प्राप्त हुआ। गुरु ने शिष्य की तीक्ष्ण बुद्धि और दार्शनिक प्रवृत्ति को भांप लिया और उसे पश्चिमी दर्शन-शास्त्र से पूरी तरह परिचित कराने में विशेष परिश्रम किया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ का वह काल राजनीतिक रूप से पूरे भारत का जागरण-काल था। पिछड़ी हुई मुसलमान जाति भी सर सय्यद, हाली आदि नेताओं के अनथक प्रयत्नों तथा 1857 ई. के विद्रोह के बाद की चालीस वर्षीय नूतन शिक्षा-दीक्षा के कारण परिस्थितियों को समझने और भारत की अन्य जातियों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के योग्य हो चुकी थी। राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र-प्रेम की आवश्यकता के वशीभूत हिन्दू और मुसलमान नेता अपने इतिहास का संपरीक्षण कर रहे थे। देश-भर में यह भावना जगाने का प्रयत्न किया जा रहा था कि हम उस समय भी सभ्य थे जब अंग्रेज़ गंवार थे। बाल गंगाधर तिलक जैसे हिन्दू नेताओं ने अपना नया कर्म-दर्शन गीता और वेदान्त से निकाला और सर सय्यद, अमीर अली (तथा बाद में इक़बाल) आदि मुसलमान नेताओं ने 'कुरान मजीद' की नवीन व्याख्या की। धर्म को दोनों जातियों ने एक ढाल के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयत्न किया जो उनके विचार में उन्हें पूँजीवाद तथा परतन्त्रता की भर्त्सनाओं से बचा सकती थी। अतीत की महानताओं की चर्चा अंग्रेज़ शासकों के सामने अपने हीनता-भाव को कम करने के उद्देश्य से की जाती थी।[4] इस

राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण से तथा सर सय्यद, हाली और शिबली के साहित्य-सम्बन्धी सुधारों से उर्दू के साहित्य क्षेत्र में भी पर्याप्त परिवर्तन हो रहा था। तसव्वुफ़ (भक्तिवाद) और इश्क़िया शायरी (प्रेम-काव्य) का उन्मूलन तो अभी नहीं हुआ था, लेकिन वह पहले जैसा धूम-धड़क्का भी न रहा था जिसने विद्रोह से पहले के लगभग समस्त उर्दू शायरों को अपने बाहुपाश में जकड़ रखा था। ग़ज़ल के साथ-साथ नज़्म (कविता) भी पनपने लगी थी, लेकिन एक नया काव्य-रूप होने के कारण अभी उसमें कलात्मक प्रौढ़ता और चिन्तनात्मक गहनता उत्पन्न न हो पाई थी। ऐसे समय में इक़बाल जैसा शायर क्षेत्र में आता है जिसके हाथों न केवल अपूर्ण रेखाचित्रों में रंग भरा गया बल्कि उर्दू शायरी धरती से उठकर आकाश तक जा पहुँची। निःसन्देह उर्दू भाषा ने ग़ालिब के अतिरिक्त अभी तक इक़बाल से बड़ा शायर उत्पन्न नहीं किया।

इस सम्बन्ध में स्वर्गीय शेख़ अब्दुल क़ादिर बैरिस्टर-एट-लॉ, भूतपूर्व सम्पादक ‘मख़ज़न’ (पत्रिका) का यह कथन दिलचस्पी से ख़ाली न होगा कि:

“अगर मैं तनासख़ (आवागमन) का क़ायल होता तो ज़रूर कहता कि ग़ालिब को उर्दू और फ़ारसी शायरी से जो इश्क़ था उसने उनकी रूह को अदम (परलोक) में जाकर भी चैन नहीं लेने दिया और मजबूर किया कि वह फिर किसी इन्सानी जिस्म में पहुँचकर शायरी के चमन की सिंचाई करे; और उसने पंजाब के एक गोशे में, जिसे स्यालकोट कहते हैं, दोबारा जन्म लिया और मोहम्मद इक़बाल नाम पाया।”

यों तो शायरी का शौक़ इक़बाल को स्कूल-जीवन ही में उत्पन्न हो चुका था और वे अपनी कविताएँ डाक द्वारा उर्दू के प्रसिद्ध शायर और उस्ताद दाग़ देहलवी को संशोधनार्थ भेजा करते थे, लेकिन वास्तविक रूप में उनकी शायरी की शुरुआत लाहौर आकर हुई। उस समय उनकी आयु बाईस वर्ष की थी जब मित्रों के आग्रह पर उन्होंने वहाँ के एक मुशायरे (कवि-सम्मेलन) में अपनी ग़ज़ल पढ़ी। उस मुशायरे में मिर्ज़ा अ़रशद गोरगानी भी थे जिनकी गणना उन दिनों चोटी के शायरों में होती थी। जब इक़बाल ने ग़ज़ल का यह शे’र पढ़ा:

मोती समझ के शाने-करीमी[5] ने चुन लिये
क़तरे जो थे मेरे अर्क़-इन्फ़आल[6] के

तो मिर्ज़ा अरशद तड़प उठे। बड़ी प्रशंसा की और कहा कि “मियां साहबज़ादे! सुबहान अल्लाह, इस उम्र में यह शे’र!”

उसी उम्र में मिर्ज़ा दाग़ ने भी अपने प्रतिभाशाली शिष्य की रचनाएँ इन शब्दों के साथ वापस करनी शुरू कर दीं कि रचनाएँ संशोधन की मोहताज नहीं हैं।

सन् 1899 में इक़बाल ने पंजाब विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया और कुछ समय तक ओरियंटल कॉलेज में और फिर गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफ़ेसर की हैसियत से काम करते रहे। और यही वह ज़माना था जब लाहौर के सीमित क्षेत्र से निकलकर उनकी शायरी की चर्चा पूरे भारत में पहुँची। पत्रिका ‘मख़ज़न’ उन दिनों उर्दू की सर्वोत्तम पत्रिका मानी जाती थी। उसके सम्पादक स्वर्गीय शेख़ अब्दुल क़ादिर ‘अंजुमने-हिमायते-इस्लाम’ के जल्सों में इक़बाल को नज़्में पढ़ते देख चुके थे और देख चुके थे कि उन दर्द-भरी नज़्मों को सुनकर उपस्थित सज्जनों की आँखों में आँसू आ जाते हैं। उन्होंने इक़बाल की नज़्मों को ‘मख़ज़न’ में विशेष स्थान देना शुरू किया। पहली नज़्म ‘हिमालय’ के प्रकाशन पर ही, जो अप्रैल 1901 के अंक में निकली, पूरा उर्दू-जगत चौंक उठा। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से मांगें आने लगीं और सभाओं द्वारा प्रार्थनाएँ की जाने लगीं कि उनके वार्षिक सम्मेलनों में वे अपनी नज़्मों के पाठ द्वारा लोगों को लाभान्वित

करें। स्वर्गीय अब्दुल क़ादिर के कथनानुसार, उन दिनों इक़बाल दिन-रात साहित्य-सम्मेलनों और बैठकों में व्यस्त रहते थे। प्रवृत्ति ज़ोरों पर थी। शे'र कहने पर आते तो एक-एक बैठक में अनगिनत शे'र कह डालते। उनके मित्र या शिष्य, जो भी पास होते, पेन्सिल-काग़ज़ लेकर लिखते जाते और वे अपनी धुन में कहते जाते। "मैंने उन दिनों उन्हें कभी काग़ज़-क़लम लेकर शे'र लिखते नहीं देखा। गढ़े-गढ़ाए शब्दों का एक दरिया या चश्मा उबलता मालूम होता था। अपने शे'र सुरीली आवाज़ में, तरन्नुम से (गा कर) पढ़ते थे। स्वयं झूमते थे, और औरों को झुमाते थे। यह विचित्र विशेषता है कि मस्तिष्क ऐसा पाया था कि जितने शे'र इस प्रकार ज़बान से निकलते थे, सब-के-सब दूसरे समय और दूसरे दिन उसी क्रम से मस्तिष्क में सुरक्षित होते थे।"

इक़बाल की शायरी का प्रारम्भ देश-प्रेम तथा साम्राज्य-विरोध की भावना से हुआ। आरम्भ-काल ही से वे ऐसी शायरी को व्यर्थ समझते थे जिसका उद्देश्य मानव-मंगल न हो और उस शायर पर धिक्कार भेजते थे जो जीवन की कठिनाइयों तथा परीक्षाओं से मुँह मोड़कर पलायनवाद में शरण लेता हो। उनके समीप शायर का कर्तव्य यह था कि प्रकृति के असीम धन में से जीवन और शक्ति का जो अंश उसे मिला है उसमें वह औरों को भी शामिल करे, यह नहीं कि उठाईगीर बनकर जो रही-सही पूंजी औरों के पास है उसे भी हथिया ले:

"अगरचे आर्ट के मुतअल्लिक़ दो नज़रिये (दृष्टिकोण) मौजूद हैं: अव्वल यह कि आर्ट की ग़रज़ (उद्देश्य) महज़ हुस्न (सौंदर्य) का अहसास (अनुभूति) पैदा करना है और दोयम यह है कि आर्ट से ज़िन्दगी को फ़ायदा पहुँचना चाहिए। मेरा ज़ाती ख़याल यह है कि 'आर्ट' ज़िन्दगी के मातहत है। हर चीज़ को इन्सानी ज़िन्दगी के लिए वक़्फ़ होना चाहिए और इसलिए हर वह आर्ट जो ज़िन्दगी के लिए मुफ़ीद हो, अच्छी और जाइज़ है। और जो ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ हो, जो इन्सानों की हिम्मतों को पस्त और उनके जज़्बाते-आलिया (उच्च भावनाओं) को मुर्दा करने वाला हो, क़ाबिले-नफ़रत है और उसकी तरवीज (प्रसार) हुकूमत की तरफ़ से ममनू (निषिद्ध) क़रार दी जानी चाहिए।"

साहित्य में प्रयोगवाद के भी वे कट्टर विरोधी थे। ऐसी सुन्दर कलाकृति से क्या लाभ जिसमें केवल कला के चमत्कार दिखाए गए हों। भाषा कोई मूर्ति नहीं है जिसकी पूजा की जाए, बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति का एक साधन है। विचारों के बिना साधन अपने-आप में कोई महत्त्व नहीं रखता। इन्हीं विचारों तथा दृष्टिकोणों पर उन्होंने अपनी शायरी की नींव रखी। लगभग आधी शताब्दी में फैली हुई उनकी शायरी इस बात की गवाह है कि वे जीवन-पर्यन्त इन्हीं कर्तव्यों का पालन करते रहे। अपनी शायरी के पहले काल अर्थात् 1905 तक की शायरी में उन्होंने:

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा

और

वतन की फ़िक्र कर नादां! मुसीबत आने वाली है
तेरी बर्बादियों के मश्वरे हैं आसमानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

ऐसी देश-प्रेम में डूबी हुई तथा भारत की पराधीनता और दरिद्रता पर ख़ून के आँसू रुलाने वाली नज़्मों की रचना की। भारत के चश्मों और पर्वतों, गाती हुई नदियों, लहलहाते हुए पुष्प-कुंजों और देश-प्रेम के प्रकाश से जगमगाते हुए धरती-आकाश का पुजारी बनकर उन्होंने नानक और

चिश्ती, राम और रामतीर्थ का गुणगान किया और अबोध बालकों तक के मुँह में यह प्रार्थना डाली:

हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

अपनी शायरी के इस आरंभिक काल में उनका मानसिक क्षितिज देश-प्रेम तथा राष्ट्रवाद के (तंग) क्षेत्र तक सीमित था; और यदि उनकी मानसिक यात्रा इसी मंज़िल पर समाप्त हो जाती तो उनकी शायरी चिन्तन की नहीं, केवल नई परम्परा की शायरी होकर रह जाती। वह विशालता तथा सार्वभौमता, सृष्टि तथा ब्रह्माण्ड की वे गूढ़ समस्याएँ और उनका समाधान[7] जो यूरोप-भ्रमण के बाद उनकी रचनाओं में उत्पन्न हुआ, हम तक न पहुँचता।

1905 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब आप यूरोप गए[8] तो वहाँ आपको एक नई दुनिया देखने को मिली। यूरोपियन सभ्यता में उन्हें गुण भी नज़र आए, लेकिन गुणों से अधिक दोष दिखाई दिए, विशेषकर यूरोपवालों की अन्य देशों तथा जातियों को दास बनाने की दुर्भावना, तथा छोटे-बड़े और काले-गोरे का भेद-भाव देखकर उनके हृदय पर गहरी चोट लगी। भारत में भारतवासियों की अंग्रेज़ों द्वारा हो रही दुर्दशा को वे पहले ही देख चुके थे और उन्हें जगाने का यथासम्भव प्रयत्न भी कर चुके थे। अब विशाल अध्ययन तथा विस्तृत निरीक्षण के बाद उनकी क़लम से:

दियारे-मग़रिब[9] के रहनेवालो ख़ुदा की बस्ती दुकां नहीं है
खरा जिसे तुम समझ रहे हो, वो अब ज़रे-कम-अयार होगा
तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजर से आप ही ख़ुदकशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक[10] पे आशियाना बनेगा नापायदार[11]
होगा

ऐसे शे'र निकलने लगे और उन्होंने गम्भीर समस्याओं पर विचार करना शुरू किया।

क्या सृष्टि के रहस्य को हम बच्चों का खेल कहकर टाल सकते हैं? और यदि सचमुच यह बच्चों का ही खेल है तो पश्चिम में यह अधिक सफलता के साथ क्यों खेला जा रहा है? पूर्वी देश क्यों केवल प्राचीन महानता और आध्यात्मिक विचारधारा पर सन्तुष्ट हैं? यहाँ उनके सामने दर्शन और विज्ञान के नए मोड़ आए। डार्विन की खोज, मात्र 'बुद्धि' को अपूर्ण प्रमाणित करने वाला कांट का तर्क, हैगल, जो अनुकूलता-प्रतिकूलता (opposites) को ही विश्व-विकास का नियम सिद्ध करता है, नत्शे का 'तूफ़ानी अहं' का सिद्धान्त और बरगुसां का अन्तर्ज्ञान को प्रदान किया हुआ नया महत्त्व इत्यादि दार्शनिक सिद्धान्त नए-नए पहलुओं से उनके सामने आए। कुछ सिद्धान्त उन्होंने मार्क्स और लेनिन से भी लिए। अब उन्होंने पूरे ब्रह्माण्ड को एक विशाल कैन्वस के रूप में देखा। सत्य और तथ्य की तलाश उन्हें नए-नए रास्तों पर ले गई। एक पड़ाव से दूसरा पड़ाव। एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल। विभिन्न पथ-प्रदर्शकों के नेतृत्व में उन्होंने ब्रह्माण्ड के कोनों-खुदरों की सैर की। कल्पना की वादियों में वे बहुत दूर तक निकल गए, यहाँ तक कि उनकी कल्पना पर कोई भी सिद्धान्त पाबन्दी न लगा सका। कोई मंज़िल मंज़िल न रही। आगे बढ़ने और बढ़ते चले जाने की, सितारों से आगे और जहान देखने की उमंग और उत्सुकता उत्पन्न हुई और यहीं से उनकी शायरी में वह वेग, सौन्दर्य, प्रेरणा और दर्शन-सम्बन्धी गहनता पैदा हुई

जो उससे पहले की उर्दू शायरी में कहीं नहीं मिलती और जिसके बिना हम आधुनिक उर्दू शायरी की—और विशेष रूप से प्रगतिशील शायरी की—कल्पना तक नहीं कर सकते। ये इक़बाल ही थे जिन्होंने सबसे पहले 'इंक़िलाब' (क्रान्ति) का प्रयोग राजनीतिक तथा सामाजिक परिवर्तन के अर्थों में किया और उर्दू शायरी को क्रान्ति का वस्तु-विषय दिया। पूँजीपति और मज़दूर, ज़मींदार और किसान, स्वामी और सेवक, शासक और पराधीन की परस्पर खींचातानी के जो विषय हम आज की उर्दू शायरी में देखते हैं, उन सब पर सबसे पहले इक़बाल ने ही क़लम उठाई थी और यही वे विषय हैं जिनसे उनके बाद की पूरी पीढ़ी प्रभावित हुई, और यह प्रभाव जोश मलीहाबादी, फ़िराक़ गोरखपुरी, हफ़ीज़ जालंधरी, एहसान दानिश इत्यादि राष्ट्रवादी, रोमांसवादी और क्रान्तिवादी शायरों से होता हुआ तथा अधिक स्पष्ट रूप धारण करता हुआ फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़', सरदार जाफ़री, साहिर लुधियानवी, मख़दूम मुहीउद्दीन, वामिक़ जौनपुरी जैसे आधुनिक काल के प्रगतिशील शायरों तक पहुँचा है।

1908 में यूरोप से वापस आकर इक़बाल स्थाई रूप से लाहौर में रहने लगे। कुछ समय तक प्रोफ़ेसरी करने के बाद हमेशा के लिए नौकरी छोड़ दी और बैरिस्टरी का स्वतन्त्र धंधा अपना लिया। इस काल में उन्होंने उर्दू की बजाय फ़ारसी में अधिक लिखा। फ़ारसी को उर्दू भाषा के स्थान पर विचार-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का कारण यह था कि ज्यों-ज्यों दर्शन-शास्त्र आदि विधाओं का उनका अध्ययन गहन होता गया और उन्हें गूढ़ विचारों के प्रकटीकरण की आवश्यकता अनुभव हुई तो उन्होंने देखा कि उर्दू भाषा का शब्द-भण्डार फ़ारसी के मुक़ाबले में बहुत कम है। कुछ लोगों का मत यह है कि उर्दू के स्थान पर फ़ारसी को अपना माध्यम बनाने में यह भावना निहित थी कि अब वे केवल भारत के लिए नहीं, संसार-भर के मुसलमानों के लिए शे'र कहना चाहते थे। कारण कुछ भी हो, वास्तविकता यह है कि फ़ारसी भाषा में शे'र कहने से उनका यश भारत से निकल कर न केवल ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, टर्की और मिस्त्र तक पहुँचा, बल्कि 'असरारे-ख़ुदी' (अहंभाव के रहस्य) पुस्तक की रचना और डॉक्टर निकल्सन के उसके अंग्रेज़ी अनुवाद से तो पूरे यूरोप और अमरीका की नज़रें इस महान भारतीय कवि की ओर उठ गईं। और कदाचित् इससे प्रभावित होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उन्हें 'सर' की श्रेष्ठ उपाधि प्रदान की। (साहित्य-सेवा के फलस्वरूप टैगोर के अतिरिक्त केवल इक़बाल को ही भारत में यह सम्मान मिला) 'असरारे-ख़ुदी' से तो ख़ैर उनकी ख्याति को चार चाँद लगे ही, लेकिन चिन्तन की दृष्टि से उनकी अन्य फ़ारसी रचनाएँ 'असरारे-ख़ुदी' से आगे जाती हैं। 'पयामे-मशरिक़' जो जर्मनी के महान कवि और विचारक गेटे की रचना 'पश्चिमी प्रणाम' के उत्तर में लिखी गई थी, में दर्शन-सम्बन्धी विचारों का बड़ा सुन्दर उल्लेख मिलता है। इसमें कुछ ऐसी गहन समस्याएँ और उनका समाधान किया गया है जिसका उल्लेख इससे पूर्व इतने सरल तथा आकर्षक ढंग से नहीं हुआ था। सारांश इस रचना का यह है कि एक भूला-भटका शायर जन्नत में पहुँच जाता है। अपने विचारों में वह इतना डूबा हुआ है कि जन्नत की ख़ूबसूरतियों की ओर आँख तक उठाकर नहीं देखता। जन्नत की हर हूर उसे देखती है और कहती है कि तू बड़ा विचित्र प्राणी है। न तू शराब पीता है, न मेरी ओर देखता है! इसपर शायर उत्तर देता है कि मेरा मन जन्नत में नहीं लगता। आकांक्षा की कसक मुझे कहीं चैन नहीं लेने देती। जब मैं किसी रूपवान को देखता हूँ तो बजाय इसके कि मैं उसके रूप की सराहना करूँ या उससे आनन्दित होऊँ, मेरे मन में तुरन्त यह इच्छा उत्पन्न हो जाती है कि काश, मैंने इससे अधिक रूपवान को देखा होता।

रूपवान से रूपवानतर और उत्तम से उत्तमतर देखने की यह आकांक्षा इक़बाल की एक और फ़ारसी रचना 'जावेदनामा' में और भी सुन्दर ढंग से सामने आती है। वास्तव में, इक़बाल की यह रचना उसकी समस्त फ़ारसी रचनाओं में सर्वोत्तम है, और इसे निःसंकोच 'शाहनामा फ़िरदौसी',

‘दीवाने-हाफ़िज़’, ‘मसनवी मौलाना रुम’ और ‘गुलिस्ताने सादी’ जैसी फ़ारसी की महान और अमर कलाकृतियों के साथ रखा जा सकता है। यदि यहाँ ‘जावेदनामा’ का उल्लेख ज़रा विस्तार से कर दिया जाए तो वह असंगत न होगा। इस अद्वितीय कलाकृति में इक़बाल ने प्राचीन भारतीय संस्कृति को बड़े आदर की दृष्टि से देखा है और दिखाया है कि वे वेदों-उपनिषदों तथा ऋषि-मुनियों के विचारों से किस प्रकार लाभान्वित हुए हैं। फ़ारसी के प्रसिद्ध दार्शनिक रुमी की आत्मा के नेतृत्व में इक़बाल चन्द्रलोक, बुद्धलोक, शुक्रलोक, मंगललोक, शनिलोक इत्यादि आकाश-लोकों में पहुँचते हैं और ऋषि-मुनियों से विचार-विनिमय करते हैं। शिव से उनकी बातचीत का नमूना देखिए[12]:

“भारतीय गुरु (शिव) थोड़ी देर के लिए मौन हो गया। फिर उसने मेरी ओर देखा और बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देखा। उसने पूछा, ‘बुद्धि की मृत्यु क्या है?’ मैंने उत्तर दिया, ‘चिन्तन का त्याग।’ उसने पूछा, ‘मन की मृत्यु?’ मैंने कहा, ‘चर्चा का त्याग।’ उसने पूछा, ‘शरीर क्या है?’ मैंने कहा, ‘यह तो मार्ग की धूलि से उत्पन्न हुआ है।’ उसने पूछा, ‘प्राण?’ मैंने कहा, ‘यह ब्रह्म का एक रहस्य है?’ उसने पूछा, ‘मनुष्य?’ मैंने कहा, ‘यह उसके रहस्यों में से एक रहस्य है।’ उसने पूछा ‘जगत्?’ मैंने कहा, ‘विद्या और कला?’ मैंने कहा, ‘ये केवल छिलका-मात्र अर्थात् बाह्य वस्तु हैं।’ उसने कहा, ‘इसका प्रमाण क्या है?’ मैंने कहा, ‘प्रियतम का सामना करके इस सत्य को समझा जा सकता है।’ उसने कहा, ‘संसार के लोगों का धर्म-मत क्या है?’ मैंने कहा, ‘केवल सुनी-सुनाई बात।’ उसने कहा, ‘ऋषियों का धर्म-मत क्या है?’ मैंने कहा ‘दर्शन।’

“मेरी बातचीत से उसकी आत्मा विभोर हो उठी और उसने मुझपर हृदय में उतर जाने वाले तथ्य प्रकट कर दिए।”

और वे तथ्य इस प्रकार के थे:

“मूर्ति के सामने जाग्रत हृदय वाला काफ़िर उस दीनदार से अच्छा है जो क़ाबे में सो रहा हो।”

बुद्धलोक में गौतम बुद्ध एक अति सुन्दर अप्सरा से यह कहते हुए मिलते हैं:

“पश्चिम वालों की बुद्धि और पूर्व वालों का दर्शन, ये सब बुतख़ाना हैं और बुतों की परिक्रमा करना व्यर्थ है। अपने-आपसे डर, इस जंगल से न डर जिसमें से तू गुज़र रही है। क्योंकि तू ही तू है और अन्य दोनों लोकों का अस्तित्व है ही नहीं। ग़ैब की दुनिया (अदृश्य लोक) से आगे निकल जा, क्योंकि यह सन्देह और संशय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। संसार में रहना और संसार से मुक्ति पा लेना ही सब कुछ है। वह स्वर्ग जो परमात्मा तुझे पुरस्कार में दे देता है, न होने के समान है। हाँ, यदि तेरे कर्म के बदले में तुझे स्वर्ग मिलता है तो वह अवश्य एक चीज़ है।”

भर्तृहरि से वार्तालाप होता है तो यह तथ्य निकलता है:

“हमने जो छोटे-छोटे भगवान बना डाले हैं, उनसे ऊँचा एक भगवान मौजूद है जो मन्दिरों और मस्जिदों से कहीं दूर है। वह माथा टेकना, जिसमें कर्मनिष्ठा का उत्साह सम्मिलित नहीं, शुष्क है और मनुष्य को कहीं भी नहीं ले जाता। जीवन तो, चाहे अच्छा हो चाहे बुरा, केवल कर्म ही कर्म है। मैं एक रहस्य की बात तुमसे खोलकर कहता हूँ और इसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को नहीं है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसने यह बात अपने हृदय-पट पर लिख ली है। यह जगत्, जोकि तू देख रहा है, ईश्वर का प्रभाव नहीं है, प्रत्युत यह जो चर्ख़ा है वह भी तेरा है और वह धागा भी तेरा है जो उसके चक्र पर चल रहा है। कर्म-विपाक-विधान के सामने सिर को झुका, क्योंकि

नरक हो या इराफ़ हो (स्वर्ग और नरक के बीच का लोक) या स्वर्ग हो, ये सब कर्म ही के फल हैं।"

जीवन-दर्शन के सम्बन्ध में ही नहीं, इस रचना में देश के प्रति असीम प्रेम और पराधीनता के प्रति घोर घृणा भी मिलती है। मीर जाफ़र और सादिक़ जैसे देशद्रोही व्यक्तियों का उल्लेख इस रूप में मिलता है:

"नरक को उन्हें जलाने से भी घृणा थी। वहाँ मैंने दो शैतान देखे, जिन्होंने अपना शरीर पालने के लिए जाति की आत्मा का वध कर डाला था। जाफ़र बंगाल से और सादिक़ दकन से था। ये मानव जाति के लिए भी अभिशाप हैं, धर्म के लिए भी और देश के लिए भी। दोनों त्याज्य हैं, अप्रिय हैं, हताश हैं और हतभाग्य हैं। उनके दुष्कर्मों तथा दुश्चरित्रता के कारण एक पूरी जाति में ख़राबी उत्पन्न हो गई—एक ऐसी जाति, जिसने दूसरों को स्वाधीनता का सन्देश दिया था। उसका देश और उसका धर्म अपने-अपने स्थान से गिर गए। क्या तू नहीं जानता कि भारत भूमि, संसार के सहृदय प्राणियों की प्रिय भूमि, वह भूमि जिसकी शोभा तथा जिसकी प्रतिभा ने संसार को चमका दिया है, अभी तक धूलि और रक्त में लोट रही है? उसकी मिट्टी में पराधीनता का बीज किसने बोया? यह उन्हीं दुष्ट, नीच आत्माओं के कुकर्मों का परिणाम है।"

'जावेदनामा' का उल्लेख ज़रा विस्तार से करने की आवश्यकता इसलिए अनुभव हुई क्योंकि इक़बाल के कतिपय अनभिज्ञ शत्रु इक़बाल की कुछ रचनाओं के उदाहरणों से उन्हें सम्प्रदायवादी तथा अधिकतर मुसलमान जाति को सम्बोधन करने के कारण एक कट्टर धर्म-प्रचारक सिद्ध करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि मौलिक रूप से इक़बाल पर इस्लाम धर्म का बहुत गहरा प्रभाव है और मुसलमानों के पतन को देखकर उनका दिल रो उठता था और वे अतीत के महिमा-गान द्वारा उन्हें आगे बढ़ने का सन्देश देते थे, और यह भी सही है कि आगे चलकर इक़बाल ने 'इस्लामी स्टेट' की उद्भावना भी दी, लेकिन जैसाकि कहा जा चुका है, इस प्रकार के विचारों की आधारशिला पूरी भारतीय जाति को जाग्रत करने की भावना पर रखी गई थी। अन्यथा मुख्य रूप से इक़बाल के विचाराधीन मनुष्य और सृष्टि के परस्पर सम्बन्ध की वही सर्वकालिक समस्या रही है जिसपर प्रत्येक काल के महान कवि मनन करते रहे हैं। दान्ते ने मनन किया। मिल्टन ने मनन किया। टैगोर ने 'गीतांजलि' में मनन किया। यह मनन-चिन्तन विश्वव्यापी समस्याओं का कोई भी समाधान प्रस्तुत करे, तथा हमें उससे कितना ही मतभेद क्यों न हो, किन्तु एक सार्वभौम कृति की यह कहकर उपेक्षा नहीं की जा सकती कि उसमें केवल अमुक जाति को सम्बोधित किया गया है।

इक़बाल: विचारक की हैसियत से

इक़बाल ने अपने चिन्तन को चूँकि तर्क के स्थान पर काव्य का लिबास पहनाया है, इसलिए किसी विचारक-कवि की जीवन-उद्भावना को समझना और दूसरों को समझाना आसान काम नहीं है। प्रत्यक्ष है कि इसके लिए विश्लेषण की आवश्यकता होती है और विश्लेषण यदि तार्किक और वैज्ञानिक नियमों पर किया जाए तो काव्य पर इससे बड़ा अन्याय और कोई नहीं हो सकता। फिर कवि की हैसियत से इक़बाल का पद इतना ऊँचा है कि उनके चिन्तन पर कोई आलोचना उनकी कला के जादू को कम नहीं कर सकती।

प्राचीन-अर्वाचीन काल के लगभग सभी पूर्वी तथा पश्चिमी कवियों तथा दार्शनिकों का मत यह था कि मनुष्य को अपना अहंभाव बिल्कुल मिटा देना चाहिए क्योंकि केवल इसी अवस्था में उसकी आत्मा शान्ति और मोक्ष प्राप्त कर सकती है। परिणामस्वरूप, जिस जाति ने भी इस प्रकार के विचारों को अंगीकार किया वह अकर्मण्य तथा शिथिल हो गई। इक़बाल यदि साधारण मस्तिष्क के व्यक्ति होते तो अधिक-से-अधिक अपनी जाति के पतन पर आर्त्तनाद करके मौन हो जाते, या तसव्वुफ़ की छाया में शरण ले लेते, लेकिन इतिहास ने उनके लिए उच्च स्थान नियत कर रखा था। वे उस जीर्ण तथा पुरातन पथ पर नहीं चले। उन्होंने अपनी जाति के पतन तथा अवनति के कारण मालूम किए और अपनी बुद्धि के अनुसार उनका समाधान किया। एक भुने हुए तीतर को देखकर उन्होंने अरबी भाषा के प्रसिद्ध कवि अबुलअला मुअर्री (जो निरामिष-भोजी थे) की ज़बान से कहलवाया:

ऐ मुर्ग़के-बेचारा[13] ज़रा यह तो बता तू
तेरा वोह गुनह क्या था यह है जिसकीमुकाफ़ात[14]
अफ़सोस-सद-अफ़सोस[15] कि शाहीं[16] न बना तू
देखे न तेरी आंख ने फ़ितरत[17] के इशारे
तक़दीर के क़ाज़ी का यह फ़तवा है अज़ल[18] से
है जुर्मे-ज़ईफ़ी[19] की सज़ा मर्गे-मुफ़ाजात[20]

इक़बाल के समीप जीवित रहने का भेद 'शाहीं' (बनने) में है। तीतर बनने का परिणाम इसके अतिरिक्त दूसरा नहीं हो सकता कि लोग भूनकर खा जाएँ। और यही कारण है कि उन्होंने अपनी जाति को 'शाहीनी' का पाठ पढ़ाया और उन समस्त विचारों का विरोध किया जो 'शाहीं' बनने में बाधा डालते हों। मनुष्य को वे दमनकारी भाग्य के सामने शस्त्र डालने का सन्देश नहीं देते। प्रकृति की अंधी शक्तियों के सामने मनुष्य की विवशता पर क्रन्दन नहीं करते। उनका 'मर्दे-मोमिन' (पूर्ण मानव) दैवी शक्तियों के सामने अपनी दीनता-हीनता को स्वीकार नहीं करता बल्कि छाती तानकर उनका मुक़ाबला करता है:

अफ़लाक[21] से है उसकी हरीफ़ाना[22] कशाकश[23]
ख़ाकी[24] है मगर ख़ाक से आज़ाद है मोमिन[25]

यह द्वन्द्व ऐसे उच्च स्थान पर भी पहुँच सकता है जहाँ ख़ुदा 'तक़दीर' के मामले में भी बंदे (मनुष्य) से परामर्श लेने के लिए विवश हो जाए:

ख़ुदी[26] को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले
ख़ुदा बन्दे से ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा[27] क्या है

इक़बाल का 'मर्दे-मोमिन' प्रकृति के हाथों में कोई निर्जीव मोहरा नहीं, वह प्रकृति को बदल सकता है और अपने अहंभाव के नशे से उन्मत्त हो ख़ुदा के मुक़ाबले में अपनी श्रेष्ठता जतलाने में भी संकोच नहीं करता। फ़ारसी की एक नज़्म 'ख़ुदा और इन्सान' के कुछ टुकड़े देखिए:

ख़ुदा, इन्सान से:

मैंने मिट्टी और पानी से एक संसार बनाया
तूने मिस्त्र, तुर्की, ईरान और तातार बना लिए
मैंने धरती की छाती से लोहा उत्पन्न किया
तूने उससे तीर, ख़ंजर, तलवारें और नेज़े ढाल लिए
तूने हरी शाखाएँ काट डालीं और फैलते हुए पेड़ तोड़ गिराए
गाते हुए पक्षियों के लिए तूने पिंजरे बना डाले।

इन्सान, ख़ुदा से:

तूने, ऐ मेरे मालिक! रात बनाई, मैंने दीये जलाए
तूने मिट्टी उत्पन्न की, मैंने उससे प्याले बनाए
तूने धरती को वन, पर्वत और मरुस्थल प्रदान किए
मैंने उनमें रंगीन फूल खिलाए, हँसती हुई वाटिकाएँ सजाईं
मैं विष से तिर्याक़[28] बनाता हूँ और पत्थर से आईना
(ऐ मालिक! सच-सच बता! तू बड़ा है या मैं)

(अनुवाद)

लेकिन इसके विपरीत जब इक़बाल ख़ुदा के हुज़ूर में इबलीस (शैतान) के विद्रोह की प्रशंसा करते हैं और इबलीस और जिबरील (मुसलमानों के मतानुसार एक मशहूर फ़रिश्ता, जो पैग़म्बरों तक ख़ुदा के सन्देश पहुँचाता है) के वार्तालाप में इबलीस के मुँह से बड़े गौरव के साथ इस प्रकार के वाक्य कहलवाते हैं:

देखता है तू फ़क़त[29] साहिल से रज़्मे-ख़ैर-ओ-शर[30]।
कौन तूफ़ां के तमांचे खा रहा है, मैं कि तू?
मैं खटकता हूँ दिले-यज़दां[31] में कांटे की तरह।
तू फ़क़त अल्लाह-हू! अल्लाह-हू!! अल्लाह-हू!!!

तो हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि इक़बाल 'कर्म कर्म के लिए' और 'विद्रोह विद्रोह के लिए' मत के अनुयायी तो नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि उनके समीप स्वस्थ और अस्वस्थ कर्म में कोई भेद न हो? और इस स्थान पर पहुँचकर जब हम इस दृष्टिकोण से इक़बाल की समस्त रचनाओं का अवलोकन करते हैं और उनमें स्वस्थ तथा कल्याणकारी रचनाओं के साथ-साथ तैमूर और मुसोलिनी की प्रशंसाएँ पाते हैं तो हमारी नज़र में उनका कर्म-दर्शन अपनी उपयोगिता खो देता है। अफ़सोस कि इक़बाल कुछ सामयिक घटनाओं के कारण एक बहुत बड़ी ठोकर खा गए।

सबसे बड़ी ठोकर उन्होंने यह खाई कि उन्होंने कर्म तथा गति का प्रतीक 'शाहीं' को बनाया। 'शाहीं' एक ध्वंसात्मक पक्षी है जो जीवन उत्पन्न तो कम करता है, किन्तु बड़े पैमाने पर उसका नाश करने का अभ्यस्त है। 'शाहीनी' का सन्देश किसी जाति के लिए सामयिक रूप से भले ही हितकर हो लेकिन एक स्थाई जीवन-दर्शन की हैसियत से अत्यन्त हानिकारक है, और इसके

दार्शनिक परिणाम तो और भी भयंकर हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, जब इक़बाल 'शाहीं' की शान में इस प्रकार के शे'र कहते हैं:

हमाम-ओ-कबूतर[32] का भूखा नहीं मैं
कि है ज़िन्दगी बाज़ की ज़ाहिदाना[33]
झपटना, पलटना, पलटकर झपटना
लहू गर्म रखने का है इक बहाना[34]

तो ऐसा मालूम होता है कि वह अपने 'मर्दे-मोमिन' को किसी स्वस्थ कर्म के लिए नहीं उभार रहे बल्कि उसे हिंसावाद का पाठ पढ़ा रहे हैं। इक़बाल का यह शे'र भी इसी प्रसंग में आता है:

जो कबूतर पर झपटने में मज़ा है ऐ पिसर
वो मज़ा शायद कबूतर के लहू में भी नहीं

लेकिन, जैसाकि स्वयं इक़बाल ने कहा है:

गाह[35] मेरी निगाहे-तेज़ चीर गई दिले-वजूद[36]
गाह उलझ के रह गई अपने तवाहमात में[37]

इक़बाल स्थान-स्थान पर 'तवाहमात' में उलझे हैं, निकले हैं, फिर उलझे हैं और फिर निकले हैं। उक्त प्रकार के विचार, जिन्हें वे बड़े ठाट-बाट से प्रस्तुत करते हैं और विशेष महत्त्व देते हैं, उन्हीं विचारों का उन्मूलन भी जब उसी ठाट-बाट से करते हैं:

गर्माओ ग़ुलामों का लहू सोज़े-यक़ीं से
कुंजश्के-फ़रोमाया[38] को शाहीं[39] से लड़ा दो
और
उठा साक़िया पर्दा इस राज़ से
लड़ा दे ममोले[40] को शाहबाज़[41] से

तो हम देखते हैं कि उन्होंने अपना खोया हुआ स्थान नए सिरे से प्राप्त कर लिया है और वह ठोकर जो उन्होंने खाई थी (और जो विशेष परिस्थितियों में हर बड़ा आदमी खा सकता है) ठोकर-मात्र थी। यह सही है कि इस प्रकार की ठोकरों और मतभेदों के कारण कहीं इक़बाल की शायरी अत्यन्त सुन्दर और महान हो गई है और कहीं अत्यन्त अध:स्थल में चली गई है (विशेषत: उन स्थानों पर जहाँ उन्होंने अपने दर्शन की लपेट में समस्त भौतिक उन्नतियों, विधाओं, बुद्धि तथा विज्ञान को ले लिया है) लेकिन सामूहिक रूप से उनकी महानता में कोई अन्तर नहीं आता। समय की छलनी जब उनकी समस्त धारणाओं को छानेगी तो केवल श्रेयस्कर तत्व ही बाक़ी रहेंगे। इक़बाल को भी तो इसपर आग्रह नहीं था कि जब भी और जो कुछ भी उन्होंने कहा है उसे अन्तिम शब्द समझ लिया जाए:

"फ़ल्सफ़ियाना तफ़क्कुर (दर्शन-चिन्तन) में हर्फ़ेआख़िर (अन्तिम शब्द) कोई चीज़ नहीं है। ज्यों-ज्यों इल्म वसीअ़ (विशाल) होगा और ज़हनी और दिमाग़ी सलाहियतें

(क्षमताएं) बढ़ेंगी, दूसरे नज़रिये (सिद्धान्त) और ग़ालिबन बेहतर नज़रिये, दस्तयाब होंगे।"

21 अप्रैल, 1938 को उर्दू और फ़ारसी शायरी के चमन का यह 'दीदावर', जिसकी दृष्टि से चमन का कोई कोना, कोई फूल, कोई काँटा न बच सका, जो शायर भी था और दार्शनिक भी, जिसके यहाँ ताप भी है और मस्ती भी, बुद्धि तथा अनुराग की अनन्त छेड़छाड़ का वर्णन भी है और सौन्दर्य के चमत्कारों का चित्रण भी, जिसने प्राचीन तथा अर्वाचीन दर्शनशास्त्र, इस्लामी और ग़ैर-इस्लामी तसव्वुफ़ के तमाम पहलू, संसार की विभिन्न सभ्यताओं की जीवन-व्यवस्था, नैतिक सिद्धान्त, संस्कृति की नियमावली, व्यक्तिगत तथा सामूहिक व्यवहार के ढंग, तथा राजनीतिक प्रवृत्तियों इत्यादि समस्त विषयों को शे'र के वस्त्र पहनाए और सृष्टि के गूढ़ भेदों को प्रकट करने का यथासम्भव प्रयत्न किया, उर्दू तथा फ़ारसी भाषाओं में कई महान कलाकृतियों की सम्पत्ति छोड़कर इस संसार से उठ गया।

इक़बाल की छोड़ी हुई सम्पत्ति उर्दू शायरों की वर्तमान पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन कर रही है, और निस्सन्देह आने वाली अनेकों पीढ़ियों का पथ-प्रदर्शन करेगी।

—प्रकाश पंडित

1. आँख की आकृति से मिलता-जुलता फूल
2. ज्योतिविहीनता
3. आँख रखने वाला (पारखी)
4. इस प्रकार के अतीतवाद से बाद में संकीर्णता उत्पन्न हुई और फिर इस प्रवृत्ति ने इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि इससे न केवल 'दो जातियों के सिद्धान्त' को हवा मिली बल्कि देश तक का विभाजन हो गया।
5. दया की शान (भगवान)
6. पश्चात्ताप के कारण आए हुए पसीने के
7. जिनसे सैद्धान्तिक मतभेद तो हो सकता है लेकिन जिनकी प्रभावात्मकता से इन्कार करना सम्भव नहीं।
8. यूरोप के तीन वर्षीय निवास में आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। ईरान के दर्शन पर एक पुस्तक लिखी, जिसपर जर्मनी के म्यूनिख़ विश्वविद्यालय ने आपको डॉक्टरेट की डिग्री प्रदान की। जर्मनी से वापस आकर आपने लन्दन में बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। उन दिनों प्रोफ़ेसर आर्नल्ड भारत से वापस लन्दन जा कर लन्दन विश्वविद्यालय में अरबी के प्रोफ़ेसर नियुक्त हो चुके थे। उनके छुट्टी जाने पर छः मास तक आप उनके स्थान पर अरबी पढ़ाते रहे।
9. पश्चिमी देशों के
10. कोमल टहनी
11. क्षण-भंगुर।
12. असुविधा न हो इसलिए फ़ारसी शे'रों के स्थान पर उनका अनुवाद दिया जा रहा है।
13. भोले पक्षी
14. सज़ा
15. सौ बार अफ़सोस
16. बाज़ पक्षी
17. प्रकृति
18. अनादिकाल
19. निर्बल होने का अपराध
20. अकाल मृत्यु
21. आसमानों (दैवी शक्तियों)

22. प्रतिद्वन्द्वी की-सी
23. संघर्ष
24. पार्थिव (मिट्टी का पुतला)
25. पूर्ण मानव
26. ख़ुदी अर्थात् अहंभाव का आधार-सूत्र 'हेगल' का तत्व-दर्शन (Dialectics) है। पराधीन जाति का एक पात्र होने के कारण चूँकि यह दर्शन इक़बाल की प्रकृति के अत्यन्त अनुकूल था इसलिए यूरोप की इस चिंगारी को उठाकर उन्होंने इस्लामी दर्शन और परम्पराओं की सहायता से प्रज्वलित किया। अहंभाव को यद्यपि उन्होंने एक कल्पित तथा आध्यात्मिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु इसके सामने वे ख़ुदा को भी तुच्छ समझते हैं और इसी के कारण जीवन को परिवर्तनशील बताकर स्थिरता को मृत्यु का दूसरा नाम देते हैं (और इस तरह इसकी भौतिक सत्ता को भी स्वीकार करते हैं)
27. मर्ज़ी।
28. विष-निवारक औषधि
29. केवल
30. अच्छाई और बुराई की लड़ाई
31. ख़ुदा के दिल में।
32. कबूतर, निरीह पक्षी
33. परहेज़गारी की
34. "युद्ध लहू गर्म रखने का एक बहाना है" (मुसोलिनी)
35. कभी
36. सृष्टि का दिल
37. भ्रमों में
38. तुच्छ चिड़िया
39. बाज़ पक्षी
40 एक छोटी चिड़िया
41. शूरवीर, योद्धा

नज़्में

मेरा वतन वही है

चिश्ती[1] ने जिस ज़मीं पे पैग़ामे-हक़[2] सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत[3] का गीत गाया
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों[4] से दश्ते-अरब[5] छुड़ाया
मेरा वतन वही है—मेरा वतन वही है
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहां को जिसने इल्मो-हुनर दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़[6] ने ज़र का[7] असर दिया था
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है—मेरा वतन वही है
टूटे थे जो सितारे फ़ारस के आस्मां से
फिर ताब दे के[8] जिसने चमकाये कहकशां-से[9]
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से
मीरे-अरब[10] को आई ठंडी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है—मेरा वतन वही है
बंदे कलीम जिसके, परबत जहाँ के सीना
नूरे-नबी का आकर ठहरा जहाँ सफ़ीना[11]
रिफ़अत[12] है जिस ज़मीं की बामे-फ़लक का ज़ीना[13]
जन्नत की ज़िन्दगी है, जिसकी फ़िज़ा में जीना
मेरा वतन वही है—मेरा वतन वही है

---

1. ख़्वाजा सलीम चिश्ती नाम के सूफ़ी संत
2. सत्य का संदेश
3. अद्वैतवाद
4. मक्का-मदीना के लोग
5. अरब का रेगिस्तान
6. ब्रह्म
7. धन-दौलत,
8. तपा कर
9. आकाशगंगा की तरह,
10. अरब के अमीर
11. नाव

तराना-ए-हिन्द

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्तां[1] हमारा
गुरबत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा
परबत वो सबसे ऊँचा हमसाया आस्मां का
वो संतरी हमारा, वो पासबां[3] हमारा
गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियां
गुलशन[4] है जिनके दम से रश्के-जना[5] हमारा
ऐ आबे-रौदे-गंगा[6]! वो दिन हैं याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनान-ओ-मिस्त्र-ओ-रोमा सब मिट गए जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां[7] हमारा
'इक़बाल'! कोई महरम[8] अपना नहीं जहां[9] में
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहां[10] हमारा

---

1. बाग़
2. विदेश
3. रक्षक (चौकीदार)
4. बाग़
5. स्वर्ग के लिए ईर्ष्या का कारण
6. गंगा नदी
7. संसार-चक्र
8. भेदी
9. संसार
10. आन्तरिक पीड़ा

नया शिवालय

सच कह दूं ऐ बिरहमन! गर तू बुरा न माने
तेरे सनमकदों[1] के बुत हो गए पुराने
अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा
जंगो-जदल[2] सिखाया वाइज़[3] को भी ख़ुदा ने
तंग आके मैंने आख़िर दैरो-हरम को[4] छोड़ा
वाइज़ का वाज़ छोड़ा, छोड़े तेरे फ़साने[5]
पत्थर की मूरतों में समझा है तू ख़ुदा है
ख़ाके-वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है

आ ग़ैरियत[6] के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्शे-दुई[7] मिटा दें
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवालय इस देस में बना दें
दुनिया के तीरथों से ऊँचा हो अपना तीरथ
दामाने-आस्मां[8] से इसका कलश मिला दें
हर सुबह उठके गायें मंतर[9] वो मीठे-मीठे
सारे पुजारियों को मय[10] पीत की पिला दें
शक्ति भी शान्ति भी भक्ति के गीत में है
धरती के बासियों की मुक्ति परीत[11] में है

---

1. बुतख़ाना (मन्दिर)
2. युद्ध
3. इस्लामी उपदेशक
4. मन्दिर तथा काबे की चारदीवारी को
5. कहानियाँ
6. वैर-भाव
7. दुई के चिन्ह
8. आकाश का दामन (आकाश)
9. मन्त्र
10. मदिरा
11. प्रीत

सदा-ए-दर्द

जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे
हाँ, डुबो दे, ऐ मुहीते-आबे गंगा[1] तू मुझे

सरज़मीं अपनी क़यामत की निफ़ाक़ अंगेज़[2] है
वस्ल[3] कैसा याँ तो एक क़ुर्बे-फ़िराक़ अंगेज़[4] है
बदले यक रंगी के ये आशनाई[5] है ग़ज़ब
एक ही ख़िरमन[6] के दानों में जुदाई है ग़ज़ब

जिसके फूलों में अख़ूबत की हवा आई नहीं
उस चमन में कोई लुत्फ़े-नग़्मा पैराई नहीं
लज़्ज़ते-क़ुर्बे-हक़ीक़ी[7] पर मिटा जाता हूँ मैं
इख़्तिलासे-मौजो-साहिस से[8] घबराता हूँ मैं

दाना-ए-ख़िरमन नुमा है शायरे-मुअज़्ज़[9] बयाँ
हो न ख़िरमन ही तो इस दाने की हस्ती फिर कहाँ
हुस्न हो क्या ख़ुदनुमा जब कोई माइल[10] ही न हो
शम्अ को जलने से क्या मतलब जो महफ़िल ही न हो

ज़ौक़े-गोयाई[11] ख़मोशी से बदलता क्यों नहीं
मेरे आइने से ये जौहर निकलता क्यों नहीं
कब ज़बाँ खोली हमारी लज़्ज़ते-गुफ़्तार ने[12]
फूँक डाला जब चमन को आतिशे-पैकार ने[13]

---

1. गंगा नदी
2. फूट डालने वाली
3. मिलाप
4. अलगाव वाला
5. अपरिचय, अज्ञानता
6. खलिहान, बिना ओसाया हुआ अनाज का ढेर
7. वास्तविक निकटता की ख़ुशी
8. लहरों और किनारों के उचक ले जाने से
9. सम्मानित शायर
10. आकर्षित होने वाला

तस्वीरे-दर्द

नहीं मिन्नत-कशे-ताबे-शनीदन[1] दास्तां मेरी
ख़मोशी गुफ़्तगू है, बेज़बानी है ज़बां मेरी
यह दस्तूरे-ज़बांबन्दी[2] है कैसा तेरी महफ़िल में
यहां तो बात करने को तरसती है ज़बां मेरी
उठाए कुछ वरक़[3] लाला ने, कुछ नर्गिस ने, कुछ गुल ने
चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्तां मेरी
उड़ा ली क़ुमरियों[4] ने, तूतियों[5] ने, अंदलीबों[6] ने
चमन वालों ने मिलकर लूट ली तर्ज़े-फ़ुग़ां[7] मेरी
टपक ऐ शम्मअ़! आंसू बन के परवानों की आंखों से
सरापा[8] दर्द हूं, हसरत-भरी है दास्तां मेरी
इलाही फिर मज़ा क्या है यहां दुनिया में रहने का
हयाते-जाविदां[9] मेरी न मर्गे-नागहां[10] मेरी

मेरा रोना नहीं, रोना है ये सारे गुलिस्तां का
वो गुल हूं मैं ख़िज़ां हर गुल की है गोया ख़िज़ां मेरी
निशाने-बर्गे-गुल[11] तक भी न छोड़ा बाग़ में गुलचीं[12]
तेरी क़िस्मत से रज़्म-आराइयां[13] हैं बाग़बानों में
छुपा कर आस्तीं में बिजलियां रख दी हैं गर्दूं[14] ने
अ़नादिल[15] बाग़ के ग़ाफ़िल न बैठें आशियानों में
सुन ऐ ग़ाफ़िल! सदा[16] मेरी, यह ऐसी चीख़ है जिसको।
वज़ीफ़ा[17] जानकर पढ़ते हैं तायर[18] बोस्तानों[19] में
वतन की फ़िक्र कर नादां! मुसीबत आने वाली है
तेरी बरबादियों के मश्वरे हैं आस्मानों में
ज़रा देख उसको जो कुछ हो रहा है, होने वाला है
धरा क्या है भला अह्दे-कुहन[20] की दास्तानों में
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो!
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

हुवेदा[21] आज अपने ज़ख़्मे-पिनहां[22] करके छोड़ूँगा
लहू रो रो के महफ़िल को गुलिस्तां करके छोड़ूँगा
जलाना है मुझे हर शम्मअ़-दिल[23] को सोज़े-पिनहां से[24]
तेरी तारीक[25] रातों में चिराग़ां[26] करके छोड़ूँगा
पिरोना एक ही तस्बीह[27] में इन बिखरे दानों को

जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसां करके छोड़ूँगा
जो है पर्दों में पिनहां, चश्मे-बीना[28] देख लेती है
ज़माने की तबीयत का तकाज़ा देख लेती है

किया रफ़अत[29] की लज़्ज़त[30] से न दिल को आशना तूने
गुज़ारी उम्र पस्ती में मिसाले-नक़्शे-पा[31] तूने
फ़िदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर
मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने

दिखा वो हुस्ने-आ़लम-सोज़[32] अपनी चश्मे-पुरनम[33] को
जो तड़पाता है परवाने को, रुलवाता है शबनम को
तेरा नज़्ज़ारा[34] ही ऐ बुल्हवस[35]! मक़सद नहीं इसका
बनाया है किसी ने कुछ समझकर चश्मे-आदम[36] को
शजर[37] है फ़िर्क़ा-आराई[38] तअ़स्सुब[39] है समर[40] इसका
ये वो फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को
फिरा करते नहीं मजरूह-ए-उल्फ़त[41] फ़िक्रे-दरमां[42] में
ये ज़ख़्मी आप कर लेते हैं पैदा अपने मरहम को

बियाबाने-मोहब्बत[43] दश्ते-ग़ुरबत[44] भी, वतन भी है
यह वीराना क़फ़स[45] भी, आशियाना भी, चमन भी है
मोहब्बत ही वो मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा भी
जरस[46] भी, कारवां भी, राहबर[47] भी, राहज़न[48] भी है

---

1. सुनने की शक्ति की आभारी
2. ज़बान बन्द करने की प्रथा
3. पन्ने
4.
5.
6. बुलबुल इत्यादि पक्षी
7. आर्तनाद का ढंग
8. सिर से पैर तक
9. अमर जीवन
10. आकस्मिक मृत्यु
11. फूल की पत्ती का चिन्ह
12. फूल चुननेवाला (माली)
13. झगड़े
14. आकाश
15. बुलबुल
16. आवाज़

17. जाप
18. पक्षी
19. बाग़ों
20. पुराने ज़माने
21. प्रकट
22. छुपे घाव
23. दिल की शम्मअ
24. भीतरी अग्नि से
25. अंधियारी
26. दीपमाला
27. माला
28. देखनेवाली आंख
29. बुलंदी
30. आनन्द
31. पदचिह्न की तरह
32. संसार को जलाने वाला सौन्दर्य
33. सजल नेत्र
34. देखना
35. लोलुप
36. मनुष्य की आंख
37. वृक्ष
38. साम्प्रदायिकता
39. विद्वेष
40. फल
41. प्रेम के घायल
42. चिकित्सा की तलाश
43. प्रेम का मरुस्थल
44. विदेश का बन
45. पिंजरा
46. घड़ियाल
47. पथ-प्रदर्शक
48. डाकू

चाँद

मेरे वीराने से कोसों दूर है तेरा वतन
है मगर दरिया-ए-दिल[1] तेरी कशिश[2] से मौजज़न[3]
क़स्द[4] किस महफ़िल का है? आता है किस महफ़िल से तू
ज़र्द-रू[5] शायद हुआ रंजे-रहे-मंज़िल[6] से तू
आफ़रीनश[7] से सरापा नूर[8] तू, ज़ुल्मत[9] हूं मैं
इस सियाह-रोज़ी[10] पे लेकिन तेरा हम-क़िस्मत[11] हूं मैं
एक हल्क़े[12] पर अगर क़ायम तेरी रफ़्तार है
मेरी गर्दिश[13] भी मिसाले-गर्दिशे-परकार[14] है
ज़िन्दगी की रह में सरगरदां[15] है तू हैरां हूं मैं
तू फ़रोज़ां[16] महफ़िले-हस्ती में है, सोज़ां[17] हूं मैं
मैं रहे-मंज़िल में हूं, तू भी रहे-मंज़िल में है
तेरी महफ़िल में जो ख़ामोशी है मेरे दिल में है
तू तलब-ख़ू[18] है तो मेरा भी यही दस्तूर है
चाँदनी है नूर तेरा, इश्क़ मेरा नूर है
अंजुमन[19] है एक मेरी भी जहां रहता हूं मैं
बज़्म[20] में अपनी अगर यकता[21] है तू, तनहा हूं मैं
मेह्र[22] का परतौ[23] तेरे हक़ में है पैग़ामे-अज़ल[24]
मह्व[25] कर देता है मुझको जल्वा-ए-हुस्ने अज़ल[26]
फिर भी ऐ माहे-मुबीं[27]! मैं और हूं तू और है
दर्द जिस पहलू में उठता हो वो पहलू और है
गर्चे मैं ज़ुल्मत-सरापा[28] हूं, सरापा नूर तू
सैकड़ों मंज़िल है ज़ौक़े-आगही[29] से दूर तू
जो मेरी हस्ती का मक़सद है तुझे मालूम है
ये चमक वो है, जबीं[30] जिससे तेरी महरूम[31] है

---

1. हृदय-सागर
2. आकर्षण
3. तरंगित
4. संकल्प
5. पीले मुख वाला
6. मंज़िल तक पहुंचने में मार्ग की थकान के कारण
7. सृष्टिकाल

8. सिर से पांव तक तू ज्योति है
9. अंधकार
10. दुर्भाग्य
11. एक-सा भाग्य रखने वाला
12. चक्र
13. भाग्य-चक्र
14. परकार (गोल चक्र खींचने वाला यन्त्र) के चक्र की-सी
15. घूम रहा है
16. ज्योतिर्मय
17. जल रहा
18. याचक
19. सभा
20. सभा
21. अद्वितीय
22. सूरज
23. प्रकाश
24. मृत्यु-सन्देश
25. लीन
26. अनादिकालीन सौन्दर्य की छवि
27. जाज्वल्यमान चाँद
28. सिर से पैर तक अंधकार
29. ज्ञान प्राप्त करने की अभिरुचि
30. माथा
31. वंचित

ऐ आफ़ताब*

ऐ आफ़ताब, रूहो-रवाने - जहां है तू
शीराज़ा बंदे-दफ़्तरे-कोनो-मकां है तू
बाइस है तू उजूदो-अदम की नुमूद का
है सब्ज़ तेरे दम से चमन हस्तो-बूद का

क़ाइम ये उन्सुरुं का तमाशा तुझी से है
हर शै में ज़िन्दगी का तक़ाज़ा तुझी से है
हर शै को तेरी जल्वागरी से सबात है
तेरा ये सोज़ो-साज़ सरावा हयात है

वो आफ़ताब जिससे ज़माने में नूर है
दिल है, ख़िरद है, रूहे-रवाँ है, शुऊर है
ऐ आफ़ताब, हमको ज़ियाए-शुऊर दे
चश्मे-ख़िरद को अपनी तजल्ली से नूर दे

है महफ़िले-उजूद का सामां तराज़ तू
यज़दाने - सा किनाने - नशेबो - फ़राज़ तू
तेरा कमाल हस्ति-ए-हर जानदार में
तेरी नुमूद सिलसिला-ए-कोहसार में

हर चीज़ की हयात का परवरदिगार तू
नाईदगाने-नूर का है ताजदार तू
न इब्तदार कोई, न कोई इंतेहा तेरी
आज़ादे-क़ैदे-अव्वलो-आख़िर ज़िया तेरी

---

* इक़बाल की यह नज़्म सन् 1902 में 'मख़्ज़न' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस पर गायत्री मंत्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से उन्होंने स्वीकार किया था।

शुआए-उम्मीद[1]

सूरज ने दिया अपनी शुआओं को ये पैग़ाम
दुनिया है अजब चीज़, कभी सुबह कभी शाम
मुद्दत से तुम आवारा हो पिन्हाए-फ़िज़ा[2] में
बढ़ती ही चली जाती है बे मेहरी-ए-अय्याम[3]

न रेत के ज़र्रों पे चमकने में है राहत
न मिस्ले-सबा तौफ़े-गुलो-लाला[4] पे आराम
फिर मेरे तजल्ली कदा-ए-दिल[5] में समा जाओ
छोड़ो चमनिस्तानो-बयाबानो-दरो-बाम[6]

आफ़ाक़ के हर गोशे से[7] उठती हैं शुआएँ
बिछड़े हुए ख़ुर्शीद से होती हैं हमआग़ोश[8]

इक शोर है मग़रिब में उजाला नहीं मुमकिन
अफ़रंग मशीनों में धुएँ से है सियहपोश[9]

मशरिक़[10] नहीं गो लज़्ज़ते-नज़्ज़ारा से महरूम[11]
लेकिन सिफ़्ते-आलमे-लाहूत[12] हैं ख़ामोश
फिर हमको उसी सीना-ए-रोशन में छिपा ले
ऐ मेहर-जहां ताब न कर हमको फ़रामोश[13]

इक शोख़ किरन शोख़ मिसाले, निगाहे-हूर
आराम से फ़ारिग़ सिफ़्ते-जौहरे-सीयाब
बोली कि मुझे रुख़्सते-तनवीर अता हो[14]
जब तक न हो मशरिक़ का हर इक ज़र्रा जहांताब[15]

छोड़ूगी न मैं हिंद की तारीक फ़ज़ा को[16]
जब तक न उठे ख़्वाब से मर्दाने-गरां[17] ख़्वाब
ख़ावर[18] की उम्मीदों का यही ख़ाक है मर्कज़[19]
इक़बाल के अश्कों से यही ख़ाक है सैराब[20]

चश्मे-महरे-परवीं[21] है इसी ख़ाक से रौशन
ये ख़ाक कि है जिसका ख़ज़फ़ रेज़ा[22] दुरे नाब[23]
इस ख़ाक से उठे हैं जो गरव्वासे-मआनी[24]

जिनके लिए हर बहरे-पुर आशोब[25] है पायाब[26]

जिस साज़ के नग़्मों से हरारत थी दिलों में
महफ़िल का वही साज़ है बेगाना-ए-मिज़राब
बुतख़ाने के दरवाज़े पे सोता है बरहमन
तक़दीर को रोता है मुसल्मां तहे-महराब[27]

मशरिक से हो बेज़ार[28] न मग़रिब से हज़र कर[29]
फ़ित्रत[30] का इशारा है कि हर शब को सहर कर।[31]

---

1. उम्मीद की किरण
2. माहौल यानी परिवेश में छिपी हुई
3. समय या वक़्त की संवेदनहीनता,
4. मंद हवा की भाँति फूलों की परिक्रमा
5. प्रभायुक्त दिल
6. बाग-बगीचे, जंगल और बस्तियाँ
7. दुनिया के हर कोने से
8. सूर्य से आलिंगनबद्ध
9 कालिमा में लिपटा हुआ
10. पूर्व
11. वंचित
12. दुनिया की ख़ूबियाँ
13. ऐ दुनिया को गर्मी देने वाले कृपालु, मुझे निराश न कर
14. विदाई का प्रकाश प्राप्त हो
15. संसार की ऊष्मा
16. अंधेरे वातावरण को
17. मर्दों के गहरे भाव वाला
18. पूर
19. केंद्र, परिधि
20. सिंचित
21. चंद्रमा की आँख और कृतिका नक्षत्र
22. मिट्टी का ठीकरा और कण
23. निर्मल मोती
24. अर्थ खोजने वाले गोताखोर
25. आपत्तियों से आलोकित समुद्र
26. उथला
27. मेहराब के नीचे
28. न पूर्व से परेशान हो
29. न पश्चिम की उपेक्षा कर
30. प्रकृति
31. हर रात को प्रभात में बदल

एक आरज़ू

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूं या रब
क्या लुत्फ़ अंजुमन[1] का जब दिल ही बुझ गया हो
शोरिश[2] से भागता हूं, दिल ढूंढ़ता है मेरा
ऐसा सकूत[3] जिस पर तक़रीर भी फ़िदा हो
मरता हूं ख़ामशी[4] पर, ये आरज़ू है मेरी
दामन में कोह[5] के इक छोटा-सा झोंपड़ा हो
आज़ाद फ़िक्र[6] से हूं, उज़लत[7] में दिन गुज़ारूं
दुनिया के ग़म का दिल से कांटा निकल गया हो
लज़्ज़त[8] सरोद[9] की हो चिड़ियों के चहचहों में
चश्मों की शोरिशों में बाजा-सा बज रहा हो
गुल[10] की कली चटक कर पैग़ाम दे किसी का
साग़र[11] ज़रा-सा गोया मुझको जहांनुमा हो
हो हाथ का सिरहाना, सब्ज़ा[12] का हो बिछौना
शरमाए जिससे जलवत[13] ख़लवत[14] में वो अदा हो
मानूस[15] इस क़दर हो सूरत से मेरी बुलबुल
नन्हे से दिल में उसके खटका न कुछ मेरा हो
सफ़[16] बांधे दोनों जानिब[17] बूटे हरे-हरे हों
नद्दी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो
हो दिल-फ़रेब[18] ऐसा कुहसार[19] का नज़ारा
पानी भी मौज[20] बनकर उठ-उठ के देखता हो
आग़ोश[21] में ज़मीं की सोया हुआ हो सब्ज़ा
फिर-फिर के झाड़ियों में पानी चमक रहा हो
पानी को छू रही हो झुक-झुक के गुल[22] की टहनी
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो
महंदी लगाए सूरज जब शाम की दुल्हन को
सुर्ख़ी लिए सुनहरी हर फूल की क़बा[23] हो
रातों को चलने वाले रह जाएं थक के जिस दम
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो
बिजली चमक के उनको कुटिया मेरी दिखा दे
जब आसमां पे हर-सू[24] बादल घिरा हुआ हो
पिछले पहर की कोयल, वो सुबह की मुअज़्ज़िन[25]
मैं उसका हमनवा हूं, वो मेरी हमनवा[26] हो

कानों पे हो न मेरे दैरो-हरम का अहसां
रौज़न[27] ही झोंपड़ी का मुझको सहरनुमा[28] हो
फूलों को आए जिस दम शबनम वुज़ू[29] कराने
रोना मेरा वुज़ू हो, नाला[30] मेरा दुआ हो
इस ख़ामशी में जाएं इतने बुलन्द नाले
तारों के क़ाफ़िले को मेरी सदा[31] दिरा[32] हो
हर दर्दमन्द दिल को रोना मेरा रुला दे
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे

---

1. सभा
2. कोलाहल
3. चुप्पी (शान्ति)
4. चुप्पी
5. पहाड़
6. चिन्ता
7. एकान्त
8. आनन्द
9. गीत
10. फूल
11. मद्य का प्याला
12. हरियाली (घास-पत्ते)
13. प्रत्यक्ष (सभा)
14. एकान्त
15. परिचित
16. पंक्ति
17. ओर
18. मनमोहक
19. पर्वतमाला
20. लहर
21. गोद
22. फूल
23. वस्त्र
24. चारों ओर
25. बांग देने वाली (प्रातः हो जाने की सूचना देने वाली)
26. परस्पर बातचीत करने वाले
27. खिड़की
28. प्रातः हो जाने की सूचना देनेवाला
29. मुंह-हाथ धुलवाने
30. आर्तनाद
31. आवाज़
32. घड़ियाल की आवाज़।

माँ का ख़्वाब

मैं सोई जो इक शब[1] तो देखा ये ख़्वाब
बढ़ा और जिससे मिरा इज़्तिराब[2]
ये देखा कि मैं जा रही हूँ कहीं
अँधेरा है और राह मिलती नहीं
लरजता है डर से मिरा बाल-बाल
क़दम था वहशत[3] से उठना मुहाल
जो कुछ हौसला पा के आगे बढ़ी
तो देखा, कतार एक लड़कों की थी
ज़मर्रुद-सी[4] पोशाक पहने हुए
दीये सबके हाथों में जलते हुए
वो चुपचाप थे आगे-पीछे रवां[5]
ख़ुदा जाने, जाना था उनको कहाँ

इसी सोच में थी कि मेरा पिसर[6]
मुझे उस जमाअत[7] में आया नज़र
वो पीछे था, और तेज़ चलता न था
दीया उसके हाथों में जलता न था
कहा मैंने पहचान कर, 'मेरी जां,
मुझे छोड़ कर आ गये तुम कहाँ,
जुदाई में रहती हूँ मैं बेक़रार
पिरोती हूँ हर रोज़ अश्कों के हार
न परवा हमारी ज़रा तुमने की
गये छोड़, अच्छी वफ़ा तुमने की
जो बच्चे ने देखा मेरा पेचो-ताब[8]
दिया उसने मुँह फेर कर यूँ जवाब:
'रुलाती है तुमको जुदाई मिरी
नहीं इसमें कुछ भी भलाई मिरी
य' कह कर वो कुछ देर तक चुप रहा
दीया फिर दिखा कर ये कहने लगा
'समझती है तू, हो गया क्या इसे
तिरे आँसुओं ने बुझाया इसे

---

1. रात
2. बेचैनी
3. भय या उन्माद
4. झलमलाती हुई सी
5. आगे बढ़ते हुए
6. बेटा
7. झुंड, समूह
8. गुस्सा

हमदर्दी

टहनी पे किसी शज़र[1] की तन्हा
बुलबुल था कोई उदास बैठा
कहता था कि रात सर पे आई
उड़ने चुगने में दिन गुज़ारा
पहुँचूँ किस तरह आशियाने तक[2]
हर चीज़ पर छा गया अँधेरा
सुन कर बुलबुल की आहो-ज़ारी[3]
जुगनू कोई पास ही से बोला—

हाज़िर हूँ मदद को जानो-दिल से
कीड़ा हूँ अगर्चे[4] मैं ज़रा-सा
क्या ग़म है जो रात है अँधेरी
मैं राह में रोशनी करूँगा
अल्लाह ने दी है मुझको मश्अल[5]
चमका के मुझको दीया बनाया
हैं लोग जहाँ में वो ही अच्छे
आते हैं जो काम दूसरों के

---

1. दरख़्त, पेड़
2. घोंसले तक
3. रोना-धोना
4. यद्यपि, हालांकि
5. मशाल

उम्मीद

मुक़ाबला तो ज़माने का ख़ूब करता हूँ
अगर्चे मैं न सिपाही हूँ, ने अमीरे-जुनूद[1]!
मुझे ख़बर नहीं ये शाइरी है या कुछ और
अता हुआ है मुझे ज़िक्रो-फ़िक्रो-जज़्बो-सुरूर[2]
जबीने-बंदा-ए-हक़ में नुमूद[3] है जिसकी
उसी जलाल[4] से लबरेज़ है ज़मीरे-उजूद[5]
ये काफ़िरी तो नहीं, काफ़िरी से कम भी नहीं
कि मर्दे-हक़[6] हो गिरफ़्तारे-हाज़िरो-मौजूद
ग़मीं न हो कि बहुत दौर हैं अभी बाक़ी
नये सितारों से ख़ाली नहीं सिपहरे-कबूद[7]

---

1. सैन्य सरदार
2. गाना, गान, सरोद
3. सत्य के उपासक के माथे पर प्रकट है
4. तेज या प्रताप
5. अंतरात्मा
6. सत्यपुरुष
7. नीला आसमान

हुकूमत

है मुरीदों को हक़ बात गवारा, लेकिन
शेख़ो-मुल्ला को बुरी लगती है दरवेश की बात
क़ौम के हाथ से जाता है मताए-किरदार[1]
बहस में आता है जब फ़ल्सफ़ा-ए-ज़ातो-सिफ़ात[2]
गर्चे इस दैरे-कुहन[3] का है ये दस्तूरे-क़दीम[4]
कि नहीं मैक़दा-ओ-साक़ी-ओ-मीना का सबात[5]
क़िस्मते-बादा-मगर हक़ है उसी मिल्लत का[6]
अंगबीं जिसकी ज़बानों को है तल्ख़ आबेहयात[7]!

---

1. चरित्र की पूंजी
2. अस्तित्व और गुणों का दर्शन
3. पुराने और सड़े-गले मंदिर या इबादतख़ाने का
4. पुराना दस्तूर या नियम
5. स्थायित्व, दृढ़ता
6. मदिरा का भाग्य मगर उसी मिल्लत या समूह का हक है
7. जिसकी ज़बानों को जीवन का कड़वा जल शहद के समान है

सरमाया व मेहनत

बंदा-ए-मजबूर को जाकर मेरा पैग़ाम दे
ख़िज़्र[1] का पैग़ाम क्या है, यह पयामे-क़ायनात[2]

ऐ कि तुझको खा गया सरमायादारे-हीलागर[3]
शाख़े-आहू[4] पर रही सदियों तलक तेरी बरात[5]

कट मरा नादां ख़याली देवताओं के लिए
सुक्र[6] की लज़्ज़त में तू लुटवा गया नक़्दे-हयात[7]

मक्र की चालों से बाज़ी ले गया सरमायादार
इन्तिहा-ए-सादगी[8] में खा गया मज़दूर मात

उठ कि अब बज़्मे-जहां[9] का और ही अंदाज़ है
मशरिक़-ओ-मग़रिब में तेरे दौर[10] का आग़ाज़[11] है

आफ़ताबे-ताज़ा[12] पैदा बतने-गेती[13] से हुआ
आस्मां! डूबे हुए तारों का मातम कब तलक

तोड़ डाली फ़ितरते-इन्सां ने ज़ंजीरें तमाम
दूरी-ए-जन्नत[14] से रोती चश्मे-आदम[15] कब तलक

---

1. एक पैग़म्बर (पथ-प्रदर्शक)
2. जीवन प्रदान करने वाला संदेश
3. बहानों से लूटने वाला पूंजीपति
4. दोषपूर्ण शाखा
5. भाग्य में बंधा भाग
6. नशे
7. जीवन की नक़्दी
8. अत्यन्त भोलेपन
9. संसार
10. युग
11. प्रारम्भ
12. नया सूरज
13. संसार की कोख

14. जन्नत की दूरी
15. मानव के नेत्र

फ़ल्सफ़ा

अफ़कार[1] जवानों के ख़फ़ी[2] हों कि जली[3] हों
पोशीदा[4] नहीं मर्दे-क़लंदर[5] की नज़र से
मालूम हैं मुझको तेरे अहवाल[6] कि मैं भी
मुद्दत हुई गुज़रा था इसी राहगुज़र से
अल्फ़ाज़[7] के पेचों में उलझता नहीं दाना[8]
ग़व्वास[9] को मतलब है सदफ़[10] से कि गुहर[11] से
पैदा है[12] फ़क़त हल्क़ा-ए-अरबाब-ए-जुनूं[13] में
वो अक़्ल कि पा जाती है शो'ले को शरर[14] से
या मुर्दा है या नज़अ़ की हालत[15] में गिरफ़्तार
जो फ़ल्सफ़ा लिक्खा न गया ख़ूने-जिगर से

---

1. चिन्तन
2. मद्धम
3. उज्ज्वल
4. छुपे हुए
5. स्वतन्त्र व्यक्ति
6. हालात
7. शब्दों
8. ज्ञानी
9. गोताख़ोर (डुबकी लगाकर पानी में से चीज़ें निकालने वाला)
10. सीपी
11. मोती
12. पैदा हो सकती है
13. उन्मत्त मित्रों की चौकड़ी में
14. चिंगारी
15. अन्तिम श्वास ले रहा है

शबनम और सितारे

इक रात यूं कहने लगे शबनम से सितारे
'हर सुबह नये तुझको मयस्सर[1] हैं नज़ारे
क्या जानिये तू कितने जहां देख चुकी है
जो बनके मिटे उनके निशां देख चुकी है
ज़ुहरा[2] ने सुनी है य' ख़बर एक मलक[3] से
इंसानों की बस्ती है बहुत दूर फ़लक से
कह हमसे भी उस किश्वरे-दिलकश का[4] फ़साना
गाता है क़मर[5] जिसकी मुहब्बत का तराना
ऐ तारो, न पूछो चमनिस्ताने-जहां की
गुलशन नहीं, इक बस्ती है वो आहो-फ़ुगां की
आती है सबा वां से पलट जाने के ख़ातिर
बेचारी कली खिलती है मुर्झाने की ख़ातिर
क्या तुमसे कहूँ, क्या चमन-अफ़रोज़[6] कली है
नन्हा सा कोई शोला, बे सोज़ कली है
गुल नाला-ए-बुलबुल की सदा सुन नहीं सकता
दामन से मेरे मोतियों को चुन नहीं सकता
हैं मुर्ग़े-नवारेज़[7] गिरफ़्तार ग़ज़ब है—
उगते हैं तहे-सायए-गुल[8] ख़ार ग़ज़ब है
रहती है सदा नर्गिसे-बीमार की तर आँख
दिल तालिबे-नज़्ज़ारा[9] है, महरूम नज़र[10] आँख
दिल सोख़्ता-ए-ग़र्मी-ए-फ़र्याद है शमशाद[11]
ज़िंदानी[12] है और नाम को आज़ाद है शमशाद
तारे शरर-ए-आह[13] हैं इंसां की ज़बां में
मैं गिरिया-ए-गर्दूं[14] हूँ गुलिस्तां की ज़बां में
नादानी है ये गिर्दे-जमीं तवाफ़[15] क़मर का
समझा है कि दरमां[16] वहां ये दाग़े-जिगर का
बुनियाद है काशाना-ए-आलम[17] की हवा पर
फ़र्याद की तस्वीर है, किर्तासे-फ़ज़ा[18] पर

---

1. सुलभ
2. एक तारे का नाम

चाँद और सितारे

डरते-डरते दमे-सहर[1] से
तारे कहने लगे क़मर[2] से
नज़्ज़ारे रहे वही फ़लक[3] पर
हम थक भी गये चमक-चमक कर
काम अपना है सुबह-ओ-शाम चलना
चलना, चलना, मुदाम[4] चलना
बेताब है इस जहां की हर शै
कहते हैं जिसे सुकूं[5], नहीं है
होगा कभी ख़त्म यह सफ़र क्या
मंज़िल कभी आयेगी नज़र क्या
कहने लगा चांद, हमनशीनो[6]
ऐ मज़रअ-ए-शब[7] के खोशाचीनो[8]
जुंबिश[9] से है ज़िन्दगी जहां की
यह रस्म क़दीम[10] है यहां की
इस रह में मुक़ाम[11] बेमहल[12] है
पोशीदा[13] क़रार[14] में अज़ल[15] है
चलने वाले निकल गये हैं
जो ठहरे ज़रा, कुचल गये हैं

---

1. प्रभात
2. चाँद
3. आकाश
4. निरन्तर
5. शान्ति
6. साथियो
7. रात की खेती
8. बालियां चुनने वालो
9. कर्म
10. प्राचीन
11. ठहरना
12. असंगत (व्यर्थ)
13. निहित

हक़ीक़ते-हुस्न

ख़ुदा से हुस्न ने इक रोज़ यह सवाल किया
जहां में क्यों न मुझे तूने लाज़वाल[1] किया
मिला जवाब कि तस्वीरख़ाना है दुनिया
शबे-दराज़[2] अ़दम[3] का फ़साना है दुनिया
हुई है रंगे-तग़य्युर[4] से जब नमूद[5] इसकी
वही हसीं है हक़ीक़त ज़वाल[6] है जिसकी
कहीं क़रीब था ये गुफ़्तगू क़मर[7] ने सुनी
फ़लक[8] पे आ़म हुई अख़्तरे-सहर[9] ने सुनी
सहर ने तारे से सुनकर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बता दी ज़मीं के महरम[10] को
फिर आये फूल के आंसू पयामे-शबनम से
कली का नन्हा-सा दिल ख़ून हो गया ग़म से
चमन से रोता हुआ मौसमे-बहार गया
शबाब[11] सैर को आया था, सोगवार[12] गया

---

1. अमर
2. लम्बी रात
3. मृत्यु
4. परिवर्तनशीलता के रंग से
5. उत्पत्ति
6. मिटना
7. चाँद
8. आकाश
9. सुबह का तारा
10. भेदी
11. यौवन
12. उदास

फूलों की शहज़ादी

कली से कह रही थी एक दिन शबनम गुलिस्तां में
‘रही मैं एक मुद्दत ग़ुंचाहा-ए-बाग़े-रिजवां में[1]
तुम्हारे गुलसिताँ की कैफ़ियत सरशार है[2] ऐसी
निगह फ़िर्दौस दर दामन है मेरी चश्मे-हैरां में[3]
सुना है, कोई शहज़ादी है हाकिम इस गुलिस्तां की
कि जिसके नक्शे-पा से फूल हों पैदा बयाबां में
कभी साथ अपने उसके आस्तां[4] तक मुझको तू ले चल
छुपा कर अपने दामन में ब रंगे-मौजे-बू[5] ले चल
कली बोली, ‘सरीर आरा[6] हमारी है वो शहज़ादी
दरख़्शां[7] जिसकी ठोकर से हों पत्थर भी नगीं बन कर
मगर फ़ित्रत तेरी उफ्तंदा[8] और बेग़म की शान ऊंची
नहीं मुमकिन कि तू पहुंचे हमारी हमनशीं बन कर
पहुंच सकती है तू लेकिन हमारी शाहज़ादी तक
किसी दुख-दर्द के मारे का अश्के-आतिशीं[9] बन कर
नज़र उसकी पयामे-ईद[10] है अहले महरम को[11]
बना देती है गौहर[12] ग़मज़दों के अश्के-पैहम को[13]

---

1. देवराज इंद्र के बाग की कलियों के बीच
2. प्रसिद्ध है
3. मेरी चकित नज़र जन्नत की दूरी तै कर रही है
4. निवासगृह
5. रंग और खुशबू की भाँति,
6. महारानी,
7. चमक उठें
8. तेरी हैसियत छोटी
9. पवित्र आँसू
10. शुभ संदेश
11. दोस्तों
12. मोती
13. बरसते आँसुओं को

फ़नूने-लतीफ़[1]

ऐ अहले-नज़र[2] ज़ौक़े-नज़र[3] ख़ूब है लेकिन
जो शै की हक़ीक़त को न देखे वो नज़र क्या
जिससे दिले-दरिया मुतलातम[4] नहीं होता
ऐ क़तरा-ए-नेसां[5] वो सदफ़[6] क्या वो गुहर[7] क्या
शायर की नवा[8] हो कि मुग़न्नी[9] का नफ़स[10] हो
जिससे चमन अफ़सुर्दा[11] हो वो बादे-सहर[12] क्या

---

1. कोमल कलाएँ
2. नज़र रखने वाले (पारखी)
3. तलाश की अभिरुचि
4. तरंगित
5. वर्षा की बूँद
6. सीपी
7. मोती
8. राग
9. गायक
10. श्वास (गीत)
11. उदास
12. प्रभात-समीर

साक़ी

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

जो बादाकश थे पुराने वो उठते जाते हैं
कहीं से आबे-बक़ा-ए-दवाम[1] ले साक़ी
कटी है रात तो हंगामा-गुस्तरी[2] में तेरी
सहर[3] क़रीब है अल्ला का नाम ले साक़ी

---

1. अमृत
2. बिछौने के हंगामों में
3. सुबह

फूल

तुझे क्यों फ़िक्र है ऐ गुल! दिले-सदचाक[1] बुलबुल की।
तू अपने पैरहन[2] के चाक[3] तो पहले रफ़ू कर ले
तमन्ना आबरू की हो अगर गुलज़ारे-हस्ती[4] में
तो कांटों में उलझकर ज़िन्दगी करने की ख़ू[5] कर ले

नहीं यह शाने-ख़ुद्दारी[6], चमन से तोड़कर तुझको
कोई दस्तार[7] में रख ले, कोई ज़ेबे-गुलू[8] कर ले

---

1. विदीर्ण हृदय
2. लिबास
3. छिद्र
4. संसार
5. स्वभाव
6. स्वाभिमान की शान
7. पगड़ी
8. गले की शोभा

फ़र्माने-ख़ुदा

(फ़रिश्तों से)

उट्ठो मेरी दुनिया के ग़रीबों को जगा दो
काख़-ए-उमरा[1] के दरो-दीवार हिला दो
गरमाओ ग़ुलामों का लहू सोज़े-यक़ीं से
कुंजश्के-फ़रोमाया[2] को शाहीं[3] से लड़ा दो
सुलतानी-ए-जमहूर[4] का आता है ज़माना
जो नक़्शे-कुहन[5] तुमको नज़र आये मिटा दो

जिस खेत से दहक़ां[6] को मयस्सर नहीं रोज़ी
उस खेत के हर ग़ोशा-ए-गंदुम को जला दो
मैं नाख़ुश-ओ-बेज़ार हूं मरमर की सिलों से
मेरे लिए मिट्टी का हरम[7] और बना दो

---

1. अमीरों के महल
2. एक छोटी चिड़िया
3. बाज़ पक्षी
4. गण-राज्य
5. पुरातन (जीर्ण) चिन्ह
6. किसान
7. काबे के इर्द-गिर्द का पवित्र प्रान्त

गदाई

मैकदे में एक दिन एक रिंदे-ज़ीरक[1] ने कहा
है हमारे शहर का वाली गदा-ए-बेहया[2]
ताज पहनाया है किसकी बेकुलाही[3] ने उसे
किसकी उरियानी[4] ने बख़्शी है इसे ज़र्री क़बा[5]
उसके आबे-लालागूं[6] की ख़ूने-दहकां[7] से कशीद
तेरे-मेरे खेत की मिट्टी है उसकी कीमिया
उसके ने'मतख़ाने[8] की हर चीज़ है मांगी हुई
देने वाला कौन है? मर्दे-ग़रीबो-बेनवा
मांगने वाला गदा है, सदक़ा मांगे या ख़िराज
कोई माने या न माने मीर-ओ-सुलतां[9] सब गदा

---

1. बुद्धिमान मद्यप
2. निर्लज्ज भिखमंगा
3. बिना टोपी के सर (निर्धनता)
4. नग्नता
5. स्वर्णिम वस्त्र
6. लाल पानी (शराब)
7. किसान के लहू
8. सुख-सामग्री रखने का घर
9. अमीर और बादशाह

लाला-ए-सहरा[*]

यह गुंबदे-मीनाई[1], यह आ़लमे-तनहाई[2]
मुझको तो डराती है इस दश्त[3] की पहनाई[4]
भटका हुआ राही मैं, भटका हुआ राही तू
मंज़िल है कहां तेरी ऐ लाला-ए-सहराई
तू शाख़ से क्यों फूटा, मैं शाख़ से क्यों टूटा
इक जज़्बा-ए-पैदाई[5], इक लज़्ज़ते-यकताई[6]

उस मौज के मातम में रोती है भंवर की आंख
दरिया से उठी लेकिन साहिल से न टकराई
है गर्मी-ए-आदम[7] से हंगामा-ए-आ़लम[8] गर्म
सूरज भी तमाशाई, तारे भी तमाशाई

---

* मरुस्थल का फूल
1. आकाश का गुंबद
2. एकांत की अवस्था
3. मरुस्थल
4. विशालता
5. उत्पन्न (प्रकट) होने की भावना
6. अनुपमता का आनन्द
7. मनुष्य की गर्मी (कर्म)
8. संसार का हंगामा

सुबह

ये सहर जो कभी फ़र्दा[1] है कभी है इमरोज़[2]
नहीं मालूम कि होती है कहाँ से पैदा
वो सहर जिससे लरज़ता है शबिस्ताने-उजूद[3]
होती है बंदा-ए-मोमिन की अज़ां[4] से पैदा

1. आने वाली
2. मौजूद
3. अस्तित्व का आवास
4. ईमान पर यक़ीन रखने की अज़ान या घोषणा

निगाह

बहारो-क़ाफ़िला-ए-लाला हा-ए-सहराई[1]
शबाबो-मस्ती-ओ-ज़ौक़ो-सुरूरो-रअनाई[2]!

अँधेरी रात में चश्मकें[3] सितारों की
ये बहर[4]! ये फ़लके-नीलगूं की पहनाई[5]!

सफ़र उरुसे-क़मर[6] का अयारि-ए-शब में[7]
तुलूए-मेहरो-सुकूते-सिपहरे-मीनाई[8]!

निगाह हो जो, बहाए-नज़ारा[9] कुछ भी नहीं
कि बेचती नहीं फ़ितरत[10] जमालो-ज़ेबाई[11]

---

1. वसंत और वन में लाला के फूलों का हुजूम
2. छटा, सुन्दरता
3. इशारे
4. समुद्र
5. नीले आसमान की गहराई
6. चाँदरुपी दुल्हन
7. रात के हौदे में
8. सूर्योदय और नक्काशीदार आसमान का सुकूत अर्थात् शांति
9. नज़ारे की क़ीमत
10. प्रकृति
11. ख़ूबसूरती

फ़ल्सफ़ा-ए-ग़म

एक भी पत्ती अगर कम हो तो वो गुल[1] ही नहीं
जो ख़िज़ां-नादीदा[2] हो बुलबुल वो बुलबुल ही नहीं
आरज़ू के ख़ून से रंगीं है दिल की दास्तां
नग़्मा-ए-इन्सानियत[3] कामिल[4] नहीं ग़ैर-अज़-फ़ुग़ां[5]
ग़म जवानी को जगा देता है लुत्फ़े-ख़्वाब से
साज़ यह बेदार होता है इसी मिज़राब[6] से

शाम जिसकी आशना-ए-नाला-ए-'या-रब'[7] नहीं
जल्वा-पैरा[8] जिसकी शब में अश्क[9] के कोकब[10] नहीं
हाथ जिस गुलचीं[11] का है महफ़ूज़ नोके-ख़ार[12] से
इश्क़ जिसका बेख़बर है हिज्र[13] के आज़ाब[14] से
कुल्फ़ते-ग़म[15] गर्चे उसके रोज़ो-शब से दूर है
ज़िन्दगी का राज़ उसकी आंख से मस्तूर[16] है

रुख़सते-महबूब का मक़सद फ़ना होता अगर
जोशे-उल्फ़त भी दिले-आशिक़ से कर जाता सफ़र
इश्क़ कुछ महबूब के मरने से मर जाता नहीं
रूह में ग़म के बनके रहता है मगर जाता नहीं

आती है नद्दी जबीने-कोह[17] से गाती हुई
आस्मां के तायरों[18] को नग़्मा सिखलाती हुई
आईना रोशन[19] है उसकी सूरते-रुख़्सारे-हूर[20]
गिर के वादी की चटानों पर यह हो जाता है चूर
नहर जो थी उसके गौहर[21] प्यारे-प्यारे बन गए
यानी इस उफ़्ताद[22] से पानी के तारे बन गए
जू-ए-सीमाबे-रवां[23] फटकर परेशां[24] हो गई
मुज़्तरिब[25] बूंदों की इक दुनियां नुमायां[26] हो गई
पस्ती-ए-आलम[27] में मिलने को जुदा होते हैं हम
आर्ज़ी फ़ुर्क़त को दायम[28] जानकर रोते हैं हम

मरने वाले मरते हैं लेकिन फ़ना होते नहीं
ये हक़ीक़त में कभी हमसे जुदा होते नहीं
अक़्ल जिस दम दहर[29] की आफ़ात[30] में महसूर[31] हो
या जवानी की अंधेरी रात में मस्तूर[32] हो

ख़िज़्रे-हिम्मत[33] हो गया हो आरज़ू से गोशागीर
फ़िक्र जब आ़जिज़ हो और ख़ामोश आवाज़े-ज़मीर[34]
वादी-ए-हस्ती[35] में कोई हम-सफ़र तक भी न हो
जादह[36] दिखलाने को जुगनू का शरर[37] तक भी न हो
मरने वाले की जबीं[38] रोशन है इस ज़ुल्मात[39] में
जिस तरह तारे चमकते हैं अंधेरी रात में

---

1. फूल
2. पतझड़ न देखी हो
3. मानवता का संगीत
4. पूरा
5. बिना आर्तनाद के
6. उँगली में पहनने का छल्ला, जिससे सितार बजाई जाती है
7. जो व्यक्ति शाम के समय 'हे भगवान' कहकर दुखित न हुआ
8. प्रदर्शित
9. आँसू
10. सितारे
11. फूल चुनने वाले
12. कांटे की नोक
13. जुदाई
14. कष्ट
15. ग़म का सन्ताप
16. छुपा हुआ
17. पर्वत के माथे (शिखर) से
18. पक्षियों
19. प्रकाशमान
20. अप्सरा के कपोलों की तरह
21. मोती
22. दुर्घटना
23. बहते हुए पारे की नदी
24. छिन्न-भिन्न
25. व्याकुल
26. प्रकट
27. संसार के अध:स्थल
28. स्थायी
29. जगत
30. मुसीबतों
31. घिरी हुई
32. छुपी हुई
33. साहस का नेता
34. आत्मा की आवाज़
35. संसार
36. छोटा मार्ग

हवा है गो तेज़-ओ-तुंद लेकिन चिराग़ अपना जला रहा है
वो मर्दे-दरवेश[15] जिसको हक़[16] ने दिये हैं अंदाज़े-ख़ुस्रवाना[17]

ज़माना

जो था नहीं है, जो है न होगा, यही है एक हर्फ़े-मुजरिमाना[1]
क़रीबतर है नमूद[2] जिसकी उसी का मुश्ताक़ है ज़माना
मेरी सुराही से क़तरा-क़तरा नए हवादिस[3] टपक रहे हैं
मैं अपनी तस्बीहे-रोज़ो-शब[4] का शुमार[5] करता हूँ दाना दाना
हर एक से आशना[6] हूं लेकिन जुदा-जुदा रस्मो-राह मेरी
किसी का राकिब[7] किसी का मुरकिब[8], किसी को इबरत का ताज़ियाना[9]
न था अगर तू शरीके-महफ़िल क़ुसूर मेरा है या कि तेरा
मेरा तरीक़ा नहीं कि रख लूं किसी की ख़ातिर मये-शबाना[10]
हवाएं उनकी, फ़ज़ाएं उनकी, समन्दर उनके, जहाज़ उनके
गिरह भंवर की खुले तो क्योंकर, भंवर है तक़दीर का बहाना
जहाने-नौ[11] हो रहा है पैदा वो आ़लमे-पीर[12] मर रहा है
जिसे फ़िरंगी मुक़ामिरों ने[13] बना दिया है क़मारख़ाना[14]

---

1. अपराधपूर्ण शब्द
2. उत्पत्ति
3. दुर्घटनाएँ
4. दिन-रात की माला
5. गणना
6. परिचित
7. सवार
8. सवारी
9. कोड़ा
10. रात की शराब
11. नया संसार
12. बूढ़ा ज़माना
13. जुएबाज़ों ने
14. जुआख़ाना
15. साधु
16. भगवान
17. बादशाहों के अंदाज़

राम

लबरेज़ है शराबे-हक़ीक़त से जामे हिंद
सब फ़ल्सफ़ी हैं, ख़ित्र-ए-मग़रिब के रामे-हिंद[1]
ये हिंदियों के फ़िक्रे-फ़लक[2] उसका है असर
रिफ़अत में[3] आस्मां से भी ऊँचा है बामे-हिन्द[4]
इस देश में हुए हैं हज़ारों मलक सरिश्त[5]
मशहूर जिनके दम से है दुनिया में नामे-हिंद
है राम के उजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़
अहले नज़र समझते हैं उसको इमामे-हिंद
ऐजाज़[6] इस चिराग़े-हिदायत[7] का है यही
रौशनतराज़ सहर[8] ज़माने में शामे-हिंद
तलवार का धनी था, शुजाअत में फ़र्द[9] था
पाक़ीज़गी में,[10] जोशे मुहब्बत में फ़र्द था

---

1. हिंद का प्याला सत्य की शराब से छलक रहा है और पूर्व के सभी महान चिंतक हिंद के राम हैं
2. महान चिंतन
3. ऊँचाई
4. हिंद की शान
5. उच्च आसन पर आसीन देवता
6. चमत्कार
7. भरपूर रौशनी वाला सवेरा
8. जगमगाती हुई सुबह
9. वीरता में अद्वितीय
10. पवित्रता में

नानक

क़ौम ने पैग़ामे-गौतम की ज़रा परवा न की
क़द्र पहचानी न अपने गौहरे-यकदाना[1] की
आह बदक़िस्मत रहे आवाज़े-हक़ से बेख़बर
ग़ाफ़िल अपने फल की शीरीनी[2] से होता है शजर[3]
आश्कार[4] उसने किया जो ज़िन्दगी का राज़ था
हिंद को लेकिन ख़याली फ़ल्सफ़ा पर नाज़ था
शम्स-ए-हक़ से जो मुनव्वर हो[5], ये वो महफ़िल न थी
बारिशे-रहमत[6] हुई, लेकिन ज़मीं क़ाबिल न थी
आह, शूद्र के लिए हिंदोस्तां ग़मख़ाना[7] था
दर्दे-इंसानी से इस बस्ती का दिल बेगाना था
बरहमन सरशार[8] है अब तक मये-पिंदार[9] में
शम्-ए-गौतम जल रही है महफ़िले-अग़यार[10] में
बुतकदा[11] फिर बाद मुद्दत के मगर रौशन हुआ
नूरे-इब्राहीम से आज़र का घर रौशन हुआ
फिर उठी आख़िर सदा तौहीद[12] की पंजाब से
हिन्द को एक मर्दे-कामिल[13] ने जगाया ख़्वाब से

---

1. बेमिसाल मोती
2. मिठास
3. दरख़्त
4. जग-ज़ाहिर
5. सत्य के प्रदीप से प्रकाशित हो
6. कृपा की वर्षा
7. दुःख या कष्टों का स्थान
8. मतवाले हैं
9. घमंड की शराब
10. गैर की महफिल अर्थात् दूसरे मुल्कों में
11. मंदिर
12. ब्रह्मवाद
13. पूर्ण मानव

स्वामी रामतीर्थ

हमबग़ल दरिया से[1] है, ऐ क़तरा-ए-बेताब[2], तू
पहले गौहर[3] था, बना अब गौहरे-नायाब[4] तू
आह, खोला किस अदा से तूने राज़े-रंगो-बू
मैं अभी तक हूँ असीरे-इम्तियाज़े-रंगो-बू[5]
मिट के ग़ोशा ज़िंदगी का शोरिशे-महशर[6] बना
ये शीराज़ा बुझ के आतिशख़ाना-ए-आज़र बना
नफ़ी-ए-हस्ती[7] इक करिश्मा है दिले-आगाह[8] का
ला के दरिया में निहां मोती[9] है इल्लल्लाह का
चश्मे-नाबीना[10] से मख़्फ़ी[11] मानी-ए-अंजाम है
थम गई जिस दम तड़प सीमाब[12] सीमे-खाम[13] है

तोड़ देता है बुते-हस्ती को इब्राहीमे-इश्क़
होश का दास है गोया मस्ती-स-तस्नीमे[14]-इश्क़

---

1. नदी-तट से सटा हुआ (स्वामी रामतीर्थ की मृत्यु नदी-तट पर हुई थी)
2. ऐ अशान्त बूँद
3. मोती
4. अनमोल मोती
5. रंग और ख़ुश्बू के विवेक का क़ैदी
6. प्रलयकालीन हलचल,
7. अस्तित्व की अस्वीकृति
8. सतर्क हृदय
9. निहित
10. दृष्टिहीन
11. गुप्त
12. पारा
13. शुद्ध चाँदी
14. तस्नीम की मस्ती ('तस्नीम' स्वर्ग की एक नहर का नाम है)

शेक्सपियर

शफ़के-सुबह[1] को दरिया का ख़िराम आईना[2]
नग़्मा-ए-शाम को ख़ामुशी-ए-शाम आईना
बर्गे-गुल[3] आईना-ए-आरिज़े-ज़ेबा-ए-बहार[4]
शाहिदे-मै[5] के लिए हजला-ए-जाम[6] आईना
हुस्न आईना और दिल आईना-ए-हुस्न
दिले-इन्सां को तेरा हुस्ने-कलाम[7] आईना
है तेरे फ़िक्रे-फ़लक रस से कमाले-हस्ती
क्या तिरी फ़ित्रते-रौशन थी माइले-हस्ती[8]
तुझको जब दीदा-ए-दीदार तलब ने ढूँढ़ा
ताबे-ख़ुर्शीद[10] में ख़ुर्शीद को पिन्हां[11] देखा
चश्मे-आलम से तो हस्ती रही मस्तूर तिरी
और आलम को तिरी आँख ने उरियां देखा[12]
हिफ़्ज़े-असरार[13] का फ़ित्रत को है सौदा[14] ऐसा
राज़दां[15] फिर न करेगी कोई पैदा ऐसा

---

1. उषाकाल
2. कोमल दर्पण
3. फूल की पंखुड़ी
4. बहार के सुन्दर कपोलों का दर्पण
5. मदिरा के साक्षी
6. प्याला रूपी दुल्हन का कमरा
7. काव्य-सौंदर्य, रचना-सौंदर्य
8. क्या तेरे व्यक्तित्व का झुकाव रोशन स्वभाव की ओर था
10. सूर्य के तेज में
11. निहित, समाहित
12. दुनिया की आँखों से तो तेरा व्यक्तित्व छिपा रहा, किन्तु तुम्हारी आँख ने दुनिया को अनावरित या उसके असली रूप में देखा
13. मर्म या रहस्य की सुरक्षा की
14. कुदरत की दीवानगी
15. भेद को जानने वाला

नेपोलियन के मज़ार पर

राज़ है, राज़ है तक़दीरे-जहाने-तगो-ताज़[1]
जोशे-किरदार[2] से खुल जाते हैं तक़दीर के राज़
जोशे-किरदार से शमशीरे-सिकंदर का तुलूअ[3]
कोहे-अल्वंद[4] हुआ जिसकी हरारत से गुदाज़[5]
जोशे-किरदार से तैमूर का सैल[6] हमागीर
सैल के सामने क्या शै है नशेब और फ़राज़[7]
सफ़े-जंग गाह में[8] मर्दाने-ख़ुदा[9] की तक्बीर
जोशे-किरदार से बनती है ख़ुदा की आवाज़
है मगर फ़ुर्सते-किरदार[10] नफ़स या नफ़स[11]
एवज़े-यक दो नफ़स क़ब्र की शबहा-ए-दराज़[12]

आक़बते-मंज़िले पा वादी-ए ख़ामोशां अस्त[13]
हालिया ग़लग़ला दर गुंबदे-अफ़लाक अंदाज़

---

1. पराक्रम की दुनिया का भाग्य
2. चरित्र की उमंग
3. उदय हुआ
4. एक पर्वत जो ईरान में है
5. गर्मी से पिघला
6. सैलाब, प्रवाह
7. ऊँचाई-नीचाई
8. युद्ध क्षेत्र में सैनिकों की कतार में
9. औलिया, महात्मा
10. किरदार को अवकाश
11. पल-दो पल
12. एक-दो पल के एवज़ में क़ब्र का दीर्घकालीन अँधेरा
13. यमलोक की मंज़िल में ख़ामोश वादियाँ हैं

मुसोलिनी

पूर्व और पश्चिम के अपने दुश्मनों से

(इस नज़्म में आज के मुसोलिनियों के चेहरे पहचाने जा सकते हैं)

क्या ज़माने से निराला है मुसोलिनी का जुर्म
बेमहल[1] बिगड़ा है मासूमाने यूरोप का मिज़ाज
मैं फटकता हूँ तो छलनी को बुरा लगता है क्यों
हैं सभी तहज़ीब के औज़ार तो छलनी में छान
मेरे सौदा-ए-मलकूत को[2] ठुकराते हो तुम
तुमने क्या तोड़े नहीं कमज़ोर क़ौमों के ज़ुजाज[3]
ये अजाइब शौबदे[4] किसकी मूलूकीअत के हैं
राजधानी है, मगर बाक़ी न राजा है न राज
आले सीज़र चोब नैकी आबेयारी में रहे[5]
और तुम दुनिया के बंजर भी न छोड़ो बेख़िराज[6]
तुमने लूटे बेनवा सहरानशीनों के ख़ैयाम[7]
तुमने लूटी किश्ते-दहकाँ[8], तुमने लूटे तख़्तोताज
पर्दा-ए-तहज़ीब में ग़ारतगरी, आदमकुशी[9]
कल रवा[10] रक्खी थी तुमने, मैं रवा सकता हूँ आज

---

1. असमय, बेमौक़ा
2. हुकूमत के विचार
3. शीशे
4. धोखे, छल
5. आला हुक्मरान बाँस और बाँसुरी की सींच में रहे
6. बिना टैक्स के
7. रेगिस्तान में रहने वाले बेआवाज़ लोगों के ख़ेमे,
8. किसानों की खेती
9. सभ्यता की आड़ में लूट-खसोट और क़त्ले आम
10. कल तुमने उचित ठहराई (इस नज़्म को मुसोलिनी के बयान के रूप में लिखा गया है)

सुल्तानी

किसे ख़बर कि हज़ारों मुक़ाम रखता है
वो फ़क्र[1], जिसमें है बेपर्दा रूहे-क़ुर्आनी
ख़ुदी को जब नज़र आती है क़ाहरी[2] अपनी
यही मुक़ाम है कहते हैं जिसको सुल्तानी
यही मुक़ाम है मोमिन की क़ुव्वतों का अयार[3]
इसी मुक़ाम से आदम है ज़िल्ले सुब्हानी[4]
ये जब्रोक़हर[5] नहीं है, ये इश्क़ोमस्ती है
कि जब्रोक़हर से मुमकिन नहीं जहांबानी[6]
किया गया है ग़ुलामी में मुब्तला[7] तुझको
कि तुझसे हो न सकी फ़क्र की निगहबानी
मिसाले-माह चमकता था जिसका दाग़े-सुजूद[8]
ख़रीद ली है फ़िरंगी ने वो मुसलमानी[9]
हुआ हरीफ़[10] महो-माहताब तू जिससे
रही न तेरे सितारों में वो दरख़्शानी[11]

---

1. फ़क़ीरी
2. जुल्म-अत्याचार
3. कसौटी
4. अल्लाह या ईश्वर का साया
5. अत्याचार
6. दुनिया की हुकूमत
7. फँसाया गया
8. मस्तक पर सिज़्दा का निशान
9. यहाँ ‘मुसलमानी’ से आशय ‘असली पहचान’ से है
10. प्रतिद्वन्द्वी, मुकाबला करने वाला
11. चमक, आभा

शमा और शायर
(शमा—शायर से)

मुझको जो मौजे-नफ़स[1] देती है पैग़ामे-अजल[2]
लब[3] उसी मौजे-नफ़स से है नवा-पैरा[4] तेरा
मैं तो जलती हूं कि है मुज़्मिर[5] मेरी फ़ितरत[6] में सोज़[7]
तू फ़रोज़ां[8] है कि परवानों को हो सौदा तेरा
यूँ तो रोशन है; मगर सोज़े-दरूं[9] रखता नहीं
शो'ला है मिस्ले-चिराग़े-लाला-ए-सहरा[10] तेरा
सोच तू दिल में लक़ब[11] साक़ी का है ज़ेबा तुझे
अंजुमन प्यासी है और पैमाना बे-सहबा[12] तेरा
क़ैस[13] पैदा हों तेरी महफ़िल में यह मुमकिन नहीं
तंग है सहरा तेरा, महमिल[14] है बे-लैला तेरा
था जिन्हें ज़ौक़े-तमाशा[15], वो तो रुख़सत हो गये
ले के अब तू वादा-ए-दीदारे-आ़म[16] आया तो क्या
अंजुमन से वो पुराने शोला-आशाम[17] उठ गए
साक़िया! महफ़िल में तू आतिश-ब-जाम[18] आया तो
क्या
आख़िरे-शब[19] दीद[20] के क़ाबिल थी बिस्मिल[21] की तड़प
सुबह-दम कोई अगर बाला-ए-बाम[22] आया तो क्या

शम्मअ़-महफ़िल हो के तू जब सोज़ से ख़ाली रहा
तेरे परवाने भी इस लज़्ज़त से बेगाना[23] रहे
रिश्ता-ए-उल्फ़त[24] में जब इनको पिरो सकता था तू
फिर परेशां क्यों तेरी तस्बीह[25] के दाने रहे
शौक़े-बेपरवा[26] गया, फ़िक्रे-फ़लक-पैमां[27] गया
तेरी महफ़िल में न दीवाने न फ़रज़ाने[28] रहे
ख़ैर, तू साक़ी सही, लेकिन पिलाएगा किसे
अब तो वो मैकश[29] रहे बाक़ी न मैख़ाने रहे
रो रही है आज इक टूटी हुई मीना उसे
कल तलक गर्दिश में जिस साक़ी के पैमाने रहे
आज हैं ख़ामोश वो दश्ते-जुनूं-परवर[30] जहां
रक़्स[31] में लैला रही, लैला के दीवाने रहे

वाए नाकामी[32] मता-ए-कारवां[33] जाता रहा
कारवां के दिल से अहसासे-ज़ियां[34] जाता रहा

जिनके हंगामों से थे आबाद वीराने कभी
शहर उनके मिट गये, आबादियां बन हो गईं

तू अगर ख़ुद्दार है मिन्नतकशे-साक़ी[35] न हो
ऐन[36] दरिया में हबाब-आसा-नगूं[37] पैमाना कर
कैफ़ियत बाक़ी पुराने कोहो-सहरा[38] में नहीं
है जुनूं तेरा नया, पैदा नया वीराना कर

आशना[39] अपनी हक़ीक़त से हो ऐ दहक़ां[40] ज़रा
दाना तू, खेती भी तू, बारां[41] भी तू, हासिल[42] भी तू
आह जिसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे
राह तू, रहरौ[43] भी तू, रहबर[44] भी तू, मंज़िल भी तू
कांपता है दिल तेरा, अन्देशा-ए-तूफ़ां से क्या
नाख़ुदा[45] तू, बह्र[46] तू, कश्ती भी तू, साहिल भी तू
देख आकर कूचा-ए-चाके-गिरेबां[47] में कभी
क़ैस तू, लैला भी तू, सहरा भी तू, महमिल भी तू
वाए नादानी! कि तू मोहताजे-साक़ी हो गया
मय भी तू, मीना भी तू, साक़ी भी तू, महफ़िल भी तू
बेख़बर! तू जौहरे-आईना-ए-अय्याम[48] है
तू ज़माने में ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम है

---

1. श्वास की लहर (श्वास)
2. मृत्यु-सन्देश
3. होंठ
4. गीत गाने वाला
5. निहित
6. प्रकृति
7. जलना
8. ज्योतिर्मय
9. भीतरी आग
10. मरुस्थल में उगे हुए फूल-रूपी दीपक की भांति
11. उपाधि (उपनाम)
12. शराब से ख़ाली
13. मजनू
14. ऊँट पर कसने का कजावा, जिसमें पर्दा डालकर स्त्रियाँ बैठती हैं
15. देखने की इच्छा (आकांक्षा)

16. आम दर्शनों का वायदा
17. आग पीने वाला शराबी
18. प्याले में आग लेकर
19. रात के अन्त समय
20. देखने
21. घायल
22. छत पर, अर्थात् दर्शन देने
23. वंचित
24. प्रेम का सम्बन्ध
25. माला
26. निश्चिन्त रहने का शौक़
27. आकाश को नापने (उड़ानें भरने) का ख़याल
28. बुद्धिजीवी
29. शराबी
30. उन्मादजनक मरुस्थल
31. नृत्य
32. हाय दुर्भाग्य
33. यात्री-दल का माल-असबाब
34. लुटने का अहसास
35. साक़ी का आभारी
36. ठीक (बीच)
37. पानी के बुलबुले की तरह टेढ़ा
38. वन-पर्वत
39. परिचित
40. किसान
41. वर्षा
42. फल
43. पथिक
44. पथ-प्रदर्शक
45. मांझी
46. सागर
47. फटे गिरेबान वालों की गली में (मजनू की ओर संकेत है)
48. समय का सार

ज़मीनो-आसमां

मुमकिन है कि तू जिसको समझता है बहारां[1]
औरों की निगाहों में वो मौसम हो ख़िज़ां का
है सिलसिला अहवाल[2] का हर लमहा दिगरगूं[3]
ऐ सालिके-रह[4] फ़िक्र न कर सूदो-ज़ियां[5] की
शायद कि ज़मीं है यह किसी और जहां की
तू जिसको समझता है फ़लक[6] अपने जहां का

---

1. बसन्त ऋतु
2. परिस्थितियों (संसार) का
3. खराब
4. राही
5. लाभ-हानि
6. आकाश

दुनिया

मुझको भी नज़र आती है यह बूक़लमूनी[1]
वोह चांद, यह तारा है, वो पत्थर, यह नगीं[2] है
देती है मेरी चश्मे-बसीरत[3] यही फ़तवा[4]
वो कोह[5] यह दरिया है वो गर्दूं[6] यह ज़मीं है
हक़[7] बात को लेकिन मैं छुपाकर नहीं रखता
तू है, तुझे जो कुछ नज़र आता है नहीं है

---

1. रंगारंगी
2. हीरा
3. अंतर्दृष्टि, ज्ञानचक्षु
4. धर्मादेश
5. पर्वत
6. आकाश
7. वास्तविक

फ़ल्सफ़ा और मज़हब

यह आफ़ताब[1] क्या यह सिपहरे-बरीं[2] है क्या
समझा नहीं तसलसुले-शामो-सहर[3] को मैं
अपने वतन में हूं कि ग़रीब-उल-दियार[4] हूं
डरता हूं देख-देख के इस दश्तो-दर[5] को मैं
खुलता नहीं मेरे सफ़रे ज़िन्दगी का राज़
लाऊं कहां से बंदा-ए-साहिब-नज़र[6] को मैं
हैरां है 'बूअली'[7] कि मैं आया कहां से हूं
'रूमी'[8] यह सोचता है कि जाऊं किधर को मैं
"जाता हूं थोड़ी दूर हर इक दहरौ[9] के साथ
पहचानता नहीं हूं अभी राहबर[10] को मैं"

---

1. सूरज
2. ऊँचा आकाश
3. सुबह-शाम का अनुक्रम
4. परदेशी
5. मरुस्थल और दरवाज़ा
6. नज़र रखने वाला (पारखी) व्यक्ति
7. बूअला सेना (एक प्रसिद्ध दार्शनिक)
8. एक प्रसिद्ध ईरानी दार्शनिक
9. पथिक
10. पथ-प्रदर्शक

परवाना और जुगनू

(परवाना)

परवाने की मंज़िल[1] से बहुत दूर है जुगनू
क्यों अतिशे-बेसूद[2] पे मग़रूर है जुगनू

(जुगनू)

अल्लाह का सौ शुक्र कि परवाना नहीं मैं
दरयूज़ागरे-अतिशे-बेगाना[3] नहीं मैं

---

1. तक पहुँचने
2. व्यर्थ की आग
3. पराई आग का भिखारी.

मुल्ला और बहिश्त

मैं भी हाज़िर था वहां ज़ब्ते-सुख़न[1] कर न सका हक़[2] से जब हज़रते-मुल्ला को मिला हुक्म-बहिश्त[3] अ़र्ज की मैंने इलाही मेरी तकसीर[4] मुआ़फ़ खुश न आएंगे इसे हूरो-शराबो-लबे-किश्त नहीं फ़िर्दौस[5] मुकामे-जलदो-कालो-अक़वाल[6] बहसो-तक़रार इस अल्लाह के बन्दे की सरिश्त[7] है बदआमोज़ी-ए-अकवामो-मलल[8] काम इसका और जन्नत में न मस्जिद, न कलीसा[9], न कनिश्त[10]

1. बात को ज़ब्त करना (बिना बोले न रह सका)
2. ईश्वर
3. स्वर्ग में जाने की आज्ञा
4. अपराध
5. स्वर्ग
6. लड़ाई-झगड़े, वाद-विवाद और उक्तियों की जगह
7. स्वभाव
8. विभिन्न जातियों की त्रुटियाँ गिनवाना
9. गिरजा
10. मन्दिर

शिकवा

(केवल कुछ बंद)

है बजा[1] शेवा-ए-तस्लीम[2] में मशहूर हैं हम
क़िस्सा-ए-दर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम
साज़े-ख़ामोश[3] हैं, फ़रियाद से मामूर[4] हैं हम
नाला[5] आता है अगर लब[6] पे, तो माज़ूर[7] हैं हम
ऐ ख़ुदा! शिकवा-ए-अरबाबे-वफ़ा[8] भी सुन ले
ख़ूगरे-हम्द[9] से थोड़ा-सा गिला भी सुन ले

हमसे पहले था अब तेरे जहां का मंज़र[10]
कहीं मस्जूद[11] थे पत्थर, कहीं माबूद[12] शजर[13]
ख़गरे-पैकरे-महसूस[14] थी इन्सां की नज़र
मानता फिर कोई अनदेखे ख़ुदा को क्योंकर
तुझको मालूम है—लेता था कोई नाम तेरा
क़ुव्वते-बाज़ु-ए-मुस्लिम[15] ने किया काम तेरा

बस रहे थे यहीं सलजूक़[16] भी तूरानी[17] भी
अहले-चीं चीन में, ईरान में सासानी[18] भी
इसी मामूरे[19] में आबाद थे यूनानी भी
इसी दुनिया में यहूदी भी थे नसरानी भी
पर तेरे नाम पे तलवार उठाई किसने
बात जो बिगड़ी हुई थी वो बनाई किसने

थे हमीं एक तेरे मार्का-आराओं[20] में
ख़ुश्कियों में कभी लड़ते, कभी दरियाओं में
दीं अज़ानें कभी यूरुप के कलीसाओं में
कभी अफ़रीका के तपते हुए सहराओं में
शान आंखों में न जँचती थी जहांदारों की
कलमा पढ़ते थे हम छांव में तलवारों की

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
पांव शेरों के भी मैदां से उखड़ जाते थे
तुझसे सरकश[21] हुआ कोई तो बिगड़ जाते थे
तेग़[22] क्या चीज़ है? हम तोप से लड़ जाते थे

नक़्स तौहीद[23] का हर दिल में बिठाया हमने
फ़ेरे-ख़ंजर[24] भी ये पैग़ाम सुनाया हमने

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते-नमाज़
क़िबला-रू[25] होके ज़मीं-बोस[26] हुई क़ौमे-हिजाज़[27]
एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद-ओ-अयाज़[28]
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा-नवाज़
बन्दा-ओ-साहिब-ओ-मोहताज-ओ-ग़नी एक हुए
तेरी सरकार में पहुंचे तो सभी एक हुए
सफ़ा-ए-दहर[29] से बातिल[30] को मिटाया हमने
नौ-ए-इन्सां[31] को ग़ुलामी से छुड़ाया हमने
तेरे काबे को जबीनों[32] से बसाया हमने
तेरे क़ुरआन को सीने से लगाया हमने
फिर भी हमसे यह गिला है कि वफ़ादार नहीं
हम वफ़ादार नहीं, तू भी तो दिलदार नहीं
उम्मतें[33] और भी हैं, उनमें गुनहगार भी हैं
इज़्ज़[34] वाले भी हैं, मस्ते-मै-पिन्दार[35] भी हैं
उनमें काहिल भी हैं, ग़ाफ़िल भी हैं, हुशियार भी हैं
सैकड़ों हैं कि तेरे नाम से बेज़ार भी हैं
रहमतें हैं तेरी अग़ियार[36] के काशानों[37] पर
बर्क़[38] गिरती है तो बेचारे मुसलमानों पर
यह शिकायत नहीं, हैं उनके ख़ज़ाने मामूर[39]
नहीं महफ़िल में जिन्हें बात भी करने का शऊर[40]
क़हर तो यह है कि काफ़िर को मिलें हूरो-क़सूर[41]
और बेचारे मुसलमां को फ़क़त वादा-ए-हूर
अब वो अल्ताफ़[42] नहीं, हम पे इनायात[43] नहीं
बात यह क्या है कि पहली-सी मदारात[44] नहीं
तेरी महफ़िल भी गई, चाहने वाले भी गये
शब की आहें भी गईं, सुबह के नाले भी गये
दिल तुझे दे भी गये, अपना सिला[45] ले भी गये
आ के बैठे भी न थे और निकाले भी गये
आये उश्शाक[46] गये वादा-ए-फ़र्दा[47] लेकर
अब उन्हें ढूंढ़ चिराग़े-रुख़े-ज़ेबा[48] लेकर

---

1. सही
2. भगवान की उपासना करने के स्वभाव
3. नि:स्तब्ध साज़
4. भरे हुए
5. विलाप
6. होंठ

7. विवश
8. ईश्वर-भक्तों की शिकायत
9. स्तुति करने के अभ्यासी
10. दृश्य
11. 12. पूज्य
13. पेड़
14. ईश्वर को साकार देखने की अभ्यस्त
15. मुसलमानों के बाहु-बल
16, 17, 18. जातियों के नाम
19. संसार
20. योद्धाओं
21. विरोधी
22. तलवार
23. एकेश्वरवाद
24. ख़ंजर के नीचे
25. काबे की ओर मुँह करके
26. ज़मीन से लगकर (नमाज़ पढ़ने लगी)
27. अरब देश के एक भाग की जाति
28. बादशाह महमूद ग़ज़नवी और उसका दास अयाज़ (छोटे-बड़े)
29. युग के पन्ने (इतिहास)
30. झूठ
31. मानव-जाति
32. साष्टांग प्रणाम कर-करके
33. सम्प्रदाय
34. नम्रता
35. घमण्ड के नशे में चूर
36. परायों
37. महलों
38. बिजली
39. भरे-पूरे
40. ढंग
41. हूरें और महल
42-43. कृपाएँ
44. आवभगत
45. पुरस्कार
46. आशिक़
47. आगामी काल का वायदा
48. सुन्दर मुखड़े का चिराग़ (प्रकाश)

जवाबे-शिकवा

(दो बंद)

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं, ताक़ते-परवाज़[1] मगर रखती है
... ...
... ...
जिनको आता नहीं दुनिया में कोई फ़न[2], तुम हो
नहीं जिस क़ौम को परवा-ए-नशेमन[3], तुम हो
बिजलियाँ जिसमें हो आसूदा[4], वो ख़िरमन[5] तुम हो
बेच खाते हैं जो असलाफ़[6] के मदफ़न[7], तुम हो
हो निको-नाम[8] जो क़ब्रों की तिजारत करके
क्या न बेचोगे तो मिल जायें सनम[9] पत्थर के
मुनफ़अ़त[10] एक है इस क़ौम की, नुक़सान भी एक
एक ही सबका नबी, दीन भी, ईमान भी एक
हरम-ए-पाक[11] भी, अल्लाह भी, क़ुरआन भी एक
कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक
फ़िर्क़ाबंदी है कहीं, और कहीं ज़ाते हैं
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं

---

1. उड़ने की शक्ति
2. कला
3. घर की चिन्ता
4. संतुष्ट
5. खलिहान
6. बुज़ुर्गों
7. क़ब्रिस्तान
8. प्रसिद्ध
9. बुत (महमूद ग़ज़नवी की ओर संकेत है जिसने रुपये के प्रलोभन में न आकर सोमनाथ के मन्दिर की मूर्तियों का विध्वंस कर दिया था)
10. लाभ
11. पवित्र काबा

साक़ीनामा

पिला दे मुझे वो मये-पर्दा-सोज़
कि आती नहीं फ़स्ले-गुल[1] रोज़-रोज़
वो मय जिसमें है सोज़ो-साज़े-अज़ल[2]
वो मय जिससे खुलता है राज़े-अज़ल
उठा साक़िया पर्दा इस राज़ से
लड़ा दे ममोले[3] को शहबाज़[4] से
ज़माने के अंदाज़ बदले गये
नया राग हैं साज़ बदले गये
पुरानी सियासत गिरी ख़्वार है
ज़मीं मीरो-सुलतां से बेज़ार है
गया दौरे-सरमायादारी गया
तमाशा दिखाकर मदारी गया

फ़रेबे-नज़र[5] है सकूनो-सबात[6]
तड़पता है हर ज़र्रा-ए-क़ायनात[7]
ठहरता नहीं कारवाने-वजूद[8]
कि हर लम्हा[9] है ताज़ा शाने-वजूद
समझता है तू राज़ है ज़िन्दगी
फ़क़त[10] ज़ौक़े-परवाज़[11] है ज़िन्दगी
समझते हैं नादां इसे बेसबात[12]
उभरता है मिट-मिट के नक्शे-हयात[13]
ज़माने को ज़ंजीरे-अय्याम[14] है
दमों के उलट-फेर का नाम है
यह मौजे-नफ़स[15] क्या है, तलवार है
ख़ुदी[16] क्या है तलवार की धार है
ख़ुदी क्या है राज़े-दरूने-हयात[17]
ख़ुदी क्या है बेदारी-ए-क़ायनात[18]
अज़ल[19] इसके पीछे अबद[20] सामने
न हद इसके पीछे न हद सामने
किरन चांद में है, शरर[21] संग[22] में
यह बे-रंग है डूब कर रंग में
ख़ुदी का नशेमन[23] तेरे दिल में है
फ़लक[24] जिस तरह आंख के तिल में है

1. वसन्त ऋतु
2. अनादिकालिक तपिश तथा सुख-सामग्री
3. एक छोटी चिड़िया
4. बाज़ पक्षी
5. नज़र का धोखा
6. शान्ति और स्थिरता (जड़ता)
7. सृष्टि का प्रत्येक कण
8. जीवन का कारवां
9. प्रतिक्षण
10. केवल
11. उड़ने की अभिरुचि
12. नश्वर
13. जीवन-रेखाएँ
14. दिनों (समय) की ज़ंजीर
15. श्वास
16. अहंभाव
17. जीवन का गुप्त भेद
18. सृष्टि का जागरण
19-20. अनादि तथा अनन्त काल
21. चिंगारी (आग)
22. पत्थर
23. निवास-स्थान
24. आकाश

बच्चों के लिए

(बच्चे की दुआ)

लब[1] पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शम्मअ़ की सूरत[2] हो ख़ुदाया मेरी
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए
हो मेरे दम से युंही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब
इल्म[3] की शम्मअ़ से हो मुझको मोहब्बत या रब
हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से, ज़ईफ़ों[4] से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

---

1. होंठ
2. दीपक की तरह
3. विद्या, ज्ञान
4. दुखियों तथा बूढ़ों से

वालिदा मरहूमा की याद में

(लम्बी नज़्म के चुने हुए शे'र)

किसको अब होगा वतन में, आह, मेरा इंतज़ार
कौन मेरा ख़त न आने से रहेगा बेक़रार
ख़ाके-मर्क़द पर[1] तिरी लेकर यह फ़र्याद आऊँगा
अब दुआए-नीमशब में[2] किसको मैं याद आऊँगा
तर्बियत[3] से तेरी मैं अंजुम[4] का हमक़िस्मत हुआ
घर मेरे अज्दाद[5] का सर्माया-ए-इज़्ज़त हुआ
दफ़्तरे-हस्ती में थी ज़रीं बरक तेरी हयात
थी सरापा दीनो-दुनिया का सबक़ तेरी हयात
उम्र भर तेरी मुहब्बत मेरी ख़िदमतगर रही
मैं तिरी ख़िदमत के क़ाबिल जब हुआ तो चल बसी
वो जवाँ क़ामत[6] में है जो सूरते-सर्वे-बुलन्द
तेरी ख़िदमत से हुआ जो मुझसे बढ़कर बशमंद[7]
कारोबारे-ज़िंदगानी में वो हमपहलू मेरा
वो मुहब्बत में तिरी तस्वीर, वो बाज़ू मेरा
तुझको मिस्ले-तिफ़्ल के[8] बेदस्तो-पा रोता है वो
सब्र से नाआश्ना शामो-सुबह होता है वो
तुख़्म[9] जिसका तू हमारी किश्ते-जां[10] में बो गई
शिर्क़ते-गम से वो उल्फ़त और मुहकम[11] हो गई
आह, ये दुनिया, ये मातमख़ाना-बरनाउ पीर
आदमी है किस तिलस्मे-दोशो-फ़र्दा में असीर[12]
कितनी मुश्किल ज़िन्दगी है, किस क़दर आसाँ है मौत
गुलशने हस्ती में मानिन्दे-नसीम अरजाँ[13] है मौत
याद से तेरी दिले-दर्द आश्ना मअमूर[14] है
जैसे काबे में दुआओं से फ़िज़ा मअमूर है
ज़िन्दगानी थी तिरी महताब से ताबिंदातर[15]
ख़ूबतर था सुबह के तारे से भी तेरा सफ़र
मिस्ले-ऐवाने-सहर मर्क़द फ़िरोज़ां हो तिरा[16]
नूर से मख़्मूर यह ख़ाकी शबिस्ताँ हो तिरा[17]
आस्माँ तेरी लहद[18] पर शबनम अफ़शानी करे[19]
सब्ज़ा-ए-नौ रस्ता[20] इस घर की निगहबानी[21] करे

---

1. क़ब्र या समाधि पर
2. आधी रात की दुआओं में
3. पालन-पोषण, तालीम
4. सितारों का
5. पुरखे, पूर्वज
6. शरीर, जिस्म
7. मूल्यवान
8. बच्चों की भाँति
9. बीज
10. जीवन की क्यारी
11. दृढ़, टिकाऊ
12. बीती हुई रात और आने वाले कल के तिलिस्म में क़ैद हैं
13. सुबह की हवा की तरह सस्ती
14. परिपूर्ण, लबरेज़
15. चाँद की आभा से भी अधिक प्रकाशमान
16. सुबह की सभा की भांति तेरी समाधि रोशन (प्रकाशमान) हो
17. चमक से भरपूर हो तेरा यह मिट्टी का शयनागार
18. क़ब्र, समाधि
19. ओस बिखेरे
20. हरियाली से भरपूर नया पथ
21. रखवाली, देखरेख करे

जावेद से*

ग़ारते-ग़र्दूं[1] है ये ज़माना, है इसकी निहाद[2] काफ़िराना
दरबारे-शहंशाही से ख़ुशतर[3]—मर्दाने-ख़ुदा का आस्ताना[4]
लेकिन यह दौरे-साहिरी[5] है—अंदाज़ हैं सबके जादुआना
सर चश्मे-ज़िन्दगी[6] हुआ ख़ुश्क—बाक़ी है कहाँ मये-शबाना[7]
ख़ाली इनसे हुआ दविस्ताँ[8], थी जिनकी निगाह ताज़ियाना[9]
जिस घर का मगर चिराग़ तू है, है उसका मज़ाक़ आरिफ़ाना[10]
जौहर में हो लाइलाह तो क्या ख़ौफ़, तालीम हो गो फ़िरंगियाना
शाख़े-गुल पर चहक तो लेकिन, कर अपनी ख़ुदी में आशियाना
वो बहर[11] है आदमी कि जिसका, हर क़तरा है बहरे-बेकराना[12]
दहकां[13] अगर न हो तन आसां, हर दाना है सद हज़ार[14] दाना

ग़ाफ़िल मनशीं न वक़्त बाज़ीस्त
वक़्ते हुनर अस्त व कारसाज़ीस्त[15]

सीने में अगर दिल न हो गर्म, रह जाती हैं ज़िन्दगी में ख़ामी
नख़चीर अगर हो ज़ीरक व चुस्त[16], आती नहीं काम कुहनादामी[17]
है आबे हयात[18] इसी जहां में, शर्त इसके लिए है तिश्नाकामी[19]
ग़ैरत है तरीक़ते-हक़ीक़ी[20], ग़ैरत से है फ़क्र[21] की तमामी
ऐ जाने पिदर, नहीं है मुमकिन, शाहीन से तदरो की[22] गुलामी
नायाब नहीं मताअ-ए-गुफ़्तार[23], सदाए नूरी[24] व हज़ार जामी[25]
है मेरी बिसात क्या जहां में, बस एक फ़ुग़ाने जेर बामी[26]
इक सिद्क़े-मक़ाल[27] है कि जिससे, मैं चश्मे-जहां[28] में हूँ गैरामी[29]
अल्लाह की देन है जिसे दे, मीरास[30] नहीं बुलन्द नाभी
अपने नूरे-नज़र से क्या ख़ूब, फ़र्माते हैं हज़रते-निज़ामी

जाये कि बुज़ुर्ग बायदत बूद
फ़रज़ंदी-ए-मन नदारत सूद[31]

मोमिन पे गरां[32] है ये शबो-रोज़, दीनो-दौलत, कमार बाज़ी[33]
नापैद है बंदा-ए-अमलमस्त[34] बाक़ी है फ़क़त नफ़्स दराज़ी[35]
हिम्मत हो अगर तो ढूँढवो फ़ख्र[36], जिस फख्र, की असल है हिजाज़ी[37]
उस फ़ख्र से आदमी में पैदा, अल्लाह की शाने-बेनियाज़ी
कंजुश्को-हमाम[38] के लिए मौत, है उसका मुक़ाम शाहबाज़ी
रोशन उससे ख़िरद की आँखें[39], ले सुरमा-ए-बू अली व राज़ी[40]
हासिल उसका शिकोहे-महमूद, फ़ित्रत में अगर न हो अयाज़ी[41]

तेरी दुनिया का ये सराफ़ील[42], रखता नहीं ज़ौके-नै नवाज़ी[43]
है उसकी निगाहे-आलम आशोब[44], दर पर्दा तमाम कारसाज़ी
ये फ़ख्रे-गुयूर[45] जिसने पाया, वो तेगो-सनजां है मर्दे-ग़ाज़ी
मोमिन की इसी में है असीरी[46], अल्लाह से मांग ये फ़कीरी

---

* जावेद, मोहम्मद इक़बाल के बेटे का नाम। बेटे के नाम से एक आध्यात्मिक-दार्शनिक मस्नवी 'जावेदनामा' भी इक़बाल ने लिखी थी।

1. नष्टकारी घेरा
2. स्वभाव
3. ज़्यादा अच्छा
4. ड्योढ़ी
5. जादूगरी का
6. ज़िन्दगी का स्त्रोत
7. रात की शराब
8. पाठशाला, मक़्तब
9. चाबुक जैसी
10. सूफ़ियों जैसी सहृदयता
11. समुद्र
12. तटहीन समुद्र
13. किसान, कृषक (बहुवचन)
14. सौ हज़ार
15. ग़ाफ़िल न हो, न वक़्त गँवाओ। यह समय हुनर व कारसाज़ी का है
16. शिकार अगर बुद्धिमान व चुस्त हो
17. शिकार के पुराने अनुभव
18. जीवनदायी जल यानी अमृत
19. प्यास, संकल्प
20. सच्ची आत्मशुद्धि
21. साधुभाव, दरवेशी
22. शाहीन से चकोर की
23. बातों की पूंजी
24. एक प्रकार के लाल तोते की आवाज़
25. मद्यप, शराबी
26. छत के नीचे से दुहाई
27. सत्य वचन
28. दुनिया की दृष्टि में
29. जाना, जाता हूं
30 पैतृक सम्पत्ति
31. जो ऊंची जगह तुम पाना चाहते हो, उसके लिए बेटा होना ही काफ़ी नहीं। उसके लिए काम और प्रयत्न करना होगा।
32. मूल्यवान
33. जुआबाज़ी
34. अमल में लाने वाले लोग दुर्लभ हैं
35. किसी तरह भी जीना

फूल का तोहफ़ा अता[1] होने पर

वो मस्ते-नाज़ जो गुलशन में जा निकलती है
कली-कली की ज़बां से दुआ निकलती है
इलाही फूलों में वो इंतिख़ाब[2] मुझको करे
कली से रश्क़े-गुले-आफ़ताब[3] मुझको करे
तुझे वो शाख़ से तोड़े, ज़हे-नसीब[4] तिरे
तड़पते रह गये गुलज़ार में रकीब[5] तिरे
उठा के स़दमा-ए-फ़ुर्क़त[6] विसाल[7] तक पहुँचा
तिरी हयात का जौहर कमाल तक पहुँचा
मिरा कँवल, कि तसद्दुक[8] है जिस पे अहले-नज़र[9]
मिरे शबाब के गुलशन को नाज़ है जिस पर
कभी ये फूल हमआगोशे-मुद्दआर[10] न हुआ
किसी के दामने-रंगीं से आश्ना[11] न हुआ
शगुफ़्ता[12] कर न सकेगी कभी बहार इसे
फ़सुर्दा[13] रखता है गुलचीं[14] का इंतिज़ार इसे

---

1. भेंट में मिलना या दिया जाना
2. चुने
3. सूरज से होड़ लेने वाला फूल
4. सौभाग्य
5. ईर्ष्या करने वाले
6. वियोग
7. मिलन
8. न्योछावर
9. क़द्रदान
10. लक्ष्य प्राप्त करने के करीब
11. ख़ूबसूरत जिस्म से परिचित
12. खिलाना
13. उदास
14. फूल चुनने वाला

किसी की गोद में बिल्ली का बच्चा देखकर

तुझको दुज़दीदा निगाही[1] ये सिखा दी किसने
रम्ज़ आग़ाज़े-मुहब्बत[2] की बता दी किसने
हर अदा से तिरी पैदा है मुहब्बत कैसी
नीली आँखों से टपकती है ज़कावत[3] कैसी
देखती है कभी उनको, कभी शरमाती है
कभी उठती है कभी लेट के सो जाती है
आँख तेरी सिफ़ते-आश्ना हैरान है क्या
नूरे-आगाही से रौशन तिरी पहचान है क्या
मारती है उन्हें पूँछों से अजब नाज़ है ये
चिढ़ है या ग़ुस्सा है या प्यार का अंदाज़ है ये
शोख़ तू होगी, तो गोदी से उतारेंगे तुझे
गिर गया फूल जो सीने का, तो मारेंगे तुझे

क्या तजस्सुस[4] है तुझे, किसकी तमन्नाई है[5]
आह, क्या तू भी उसी चीज़ की सौदाई है[6]
ख़ास इंसान से कुछ हुस्न का अहसास नहीं
सूरते-दिल है ये हर चीज़ के बातिन में मकीं[7]
शीशः-ए-दहर में मानिंदे-मये नाव है इश्क़[8]
रुहे-ख़ुर्शीद है, ख़ूने-रँगे-महताब है इश्क़[9]
दिले-हर ज़र्रा[10] में पोशीदा कसक है इसकी
नूर ये वो है कि हर शै में झलक है इसकी
कहीं सामाने-मुसर्रत, कहीं साज़े-ग़म है[11]
कहीं गौहर है, कहीं अश्क, कहीं शबनम है[12]

---

1. आँखें चुराना
2. प्रेम की शुरुआत का ढंग
3. बुद्धिमानी
4. तलाश
5. चाह
6. दीवानी है
7. हर चीज़ के भीतर रहती है
8. इश्क़ दुनिया के शीशे में शराब की भाँति छलकता है
9. इश्क़ सूरज और चाँद की आभा है

तसव्वुफ़[1]

ये हिकमते-मलकूती[2], ये इल्मे-लाहूती[3]
हरम के दर्द का दर्मां नहीं[4] तो कुछ भी नहीं

ये ज़िक्रे-नीमशबी, ये मुराफ़बे[5] ये सुरूर[5]
तेरी ख़ुदी के निगहबाँ नहीं[6], तो कुछ भी नहीं
ये अक़्ल, जो माहो-परवीं[7] का खेलती है शिकार
शरीके-शोरिशे-पिन्हां नहीं[8] तो कुछ भी नहीं
ख़िरद[9] ने कह भी दिया 'लाइलाह', तो क्या हासिल
दिलो-निगाह मुसलमां नहीं, तो कुछ भी नहीं
अजब नहीं कि परीशां है गुफ़्तगू मेरी
फरोग़े-सुबह[10] परीशां नहीं, तो कुछ भी नहीं

---

1. सूफीवाद या अध्यात्मवाद
2. फ़रिश्तों वाली हिकमत
3. रूहानियत
4. क़ाबा के दर्द का इलाज नहीं 5. ये रतजगे, ये ध्यान, ये लिप्तता
6. तेरे अहं पर नज़र रखने वाले नहीं
7. चाँद-सितारों
8. दुनिया के शोर-शराबे और हंगामे से युक्त नहीं है
9. अक्ल
10. सुबह की रोशनी

ख़ुदी[1]

ख़ुदी की मौत से हिंदी शिकस्ता वालो-पर[2]
क़फ़स[3] हुआ है हलाल और आशियाना[4] हराम
सुना है मैंने ग़ुलामी से उम्मतों की निजात[5]
ख़ुदी की परवरिशो-लज़्ज़ते-नुमूद[6] में है
मौजे-नफ़स[7] क्या है? तलवार है
ख़ुदी क्या है? तलवार की धार है
ख़ुदी क्या है? राज़े दुरूने-हयात[8]
ख़ुदी क्या है? बेदारि-ए-कायनात[9]
ख़ुदी वो बहर[10] है जिसका कोई किनारा नहीं
तू आबे ज़ू[11] इसे समझा अगर, तो चारा नहीं
ख़ुदी में गुम है ख़ुदाई,[12] तलाश कर ग़ाफ़िल
यही है तेरे लिए अब सलाहकार की राह
बेज़ौक़े-नुमूद[13] ज़िन्दगी मौत
तामीरे-ख़ुद[14] में है ख़ुदाई

---

1. अहम, स्व, अस्तित्व
2. बाजू और पंख, शक्ति सामर्थ्य
3. पिंजड़ा
4. नीड़, घर
5. क़ौम की मुक्ति
6. अस्तित्व यानी हस्ती
7. साँस का आना-जाना
8. जीवन-रहस्य
9. सृष्टि की जाग्रत अवस्था
10. समुद्र
11. नदी
12. जगत, ईश्वरत्व
13. बेलुत्फ़, हस्ती निरानन्द अस्तित्व
14. अस्तित्व के निर्माण

कर्मवाद का सिद्धांत

अमल से[1] ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी, जहन्नुम भी
ये ख़ाकी अपनी फित्रत में न नूरी है न नारी है[2]
अपनी दुनिया आप पैदा कर, अगर ज़िंदों में है
सिर्रे-आदम है, ज़मीरे कुन-फ़काँ है ज़िन्दगी[3]
यक़ीं मुहकम, अमल पैहम, मुहब्बत फ़ातहे-आलम[4]
जिहादे-ज़िन्दगानी में[5] हैं ये मर्दों की पामशीरें
जिसका अमल है बे ग़रज़[6] उसकी जज़ा[7] कुछ और है
हूरो-ख़ियाम से गुज़र, वादा-ओ-जाम से गुज़र[8]
क़नाअत[9] न कर आलमे-रंगो-बू पर
चमन और भी, आशियां और भी हैं
तू शाहीं है, पर्वाज़[10] है काम तेरा
तेरे सामने आस्मां और भी हैं

हर इक मुक़ाम से आगे गुज़र गया महे-नौ[11]
कलाम[12] किसको मयस्सर हुआ है बे तग-औ-दौ[13]
राज़ है, राज़ है तक़दीरे-जहाने-तगो-ताज़
जोशे-किरदार से खुल जाते हैं तक़दीर के राज़
फित्रत को ख़िरद के रु-ब-रु कर[14]
तस्ख़ीरे - मुक़ामे - रंगो - बू कर[15]
यह घड़ी महशर[16] की है, तू अर्सा-ए-महशर[17] में है
पेश कर ग़ाफ़िल, अमल कोई अगर दफ़्तर में है

---

1. व्यवहार से
2. यह मिट्टी अपने स्वभाव में न देवता है न दैत्य
3. सृष्टि की रचना के समय ईश्वर के मुहँ से निकली वाणी
4. दृढ़ विश्वास, सतत व्यवहार, प्रेम से विश्व विजय
5. जीवन समर में
6. निःस्वार्थ
7. प्रतिकार
8. हूरों और ख़ेमों से शराब और प्यालों को त्याग दे
9. संतोष
10. उड़ना
11. नवचंद्र

12. ब्रह्मज्ञान
13. बिना प्रयास
14. प्रकृति को तर्क बुद्धि से मिलाओ
15. रंग और गंध को वश में कर
16. क़यामत की घड़ी
17. क़यामत के दौर में

विश्ववाद

करेंगे अहले-नज़र[1] ताज़ा बस्तियां आबाद
मेरी निगाह नहीं सू-ए-कूफ़ा-ओ-बग़दाद[2]
दर्वेशे-ख़ुदा मस्त, न शर्क़ी है न ग़र्बी[3]
घर मेरा न दिल्ली, न सफ़ाहाँ, न समरकन्द
हमसाया-ए-जिब्रीले-अभीं, बंदा-ए-ख़ाकी[4]
है उसका नशेमन[5] न बुख़ारा, न बदख़्शाँ
रहेगा रावी ओ- नीलो-फरात में कब तक
तेरा सफ़ीना[6] है कि बहरे बेकरां[7] के लिए
शर्क़-ओ-ग़र्ब की क़ैद से आज़ाद है वह
छमी है न शामी है, काशी न समरकंद

तू अभी रहगुज़र[8] में है, क़ैदे-मुक़ाम[9] से गुज़र
मिस्रो-हिजाज़ से गुज़र, पारसो-शाम से गुज़र
ये हिंदी ओ-खुरासानी, ये अफ़ग़ानी-ओ-तूरानी
तू ऐ शर्मिंदा-ए-साहिल[10], उछलकर बेकरां[11] हो जा

---

1. दृष्टिवान लोग
2. कूफ़र और बगदाद की तरफ
3. न पूरब का है न पश्चिम का
4. जिब्रील (एक फरिश्ता) के अमानतदार का हमसाया, मिट्टी का मनुष्य
5. नीड़
6. नौका
7. तटहीन सागर
8. मार्ग में
9. सीमाबद्ध स्थानों, सरहद बंद मुल्कों
10. तट से बँधा हुआ
11. तटहीन

एक वेद मंत्र का तर्जुमा

ख़्वीशों से[1] हो अंदेशा, न ग़ैरों से ख़तर हो
अहबाब[2] से खटका हो, न आदा[3] से हज़र हो
रोशन मेरे सीने में मोहब्बत का शरर[4] हो

दिल ख़ौफ से आज़ाद हो, बेबाक नज़र हो
पहलू में मेरे दिल हो, मै आशामे-मोहब्बत[5]
हर शै हो मिरे वास्ते पैग़ामे-मोहब्बत

---

1. अपनों से
2. मित्रों से
3. दुश्मनों से
4. चिनगारी
5. प्रेम मदिरा पीने वाला (यह इक़बाल द्वारा 'अथर्ववेद' के एक सूक्त का किया हुआ हुआ तर्जुमा है, जो उनकी किसी काव्यकृति में शामिल नहीं हुआ)

मग़्रिबी गुलामी[1]

अभी तक आदमी सैदे - ज़ुनूने - शहरवारी[2] है
क़यामत है कि इंसां नौ-ए-इंसां का शिकारी है
गर्चे मक्तब[3] का जवां ज़िन्दा नज़र आता है
मुर्दा है माँग के लाया है फ़िरंगी से नफ़स[4]
नज़र को ख़ीरा[5] करती है चमक तहज़ीबे हाज़िर[6] की
ये सन्नाई[7] मगर झूठे नगों की रेज़ाकारी है[8]
वो हिक्मत नाज़ था जिस पर ख़िरदमनदाने-मग्रिब को[9]
हवस के पंजा-ए-ख़ूनी में तेग़े-कारज़ारी[10] है
ये हुस्ने-फ़िरंगी[11] दिलो-नज़र का हिजाब[12]
बहिश्ते-मग़्रिबियाँ जल्वा हा-ए-या ब रिकाब[13]
गर्चे है दिलकुशा बहुत[14] हुस्ने फ़िरंग की बहार
तायर के बुलंद बाल दाना-ओ-दाम से गुज़र[15]
बुरा न मान, ज़रा आज़्मा के देख इसे
फ़िरंग दिल की ख़राबी, ख़िरद की मामूरी[16]
पीरे-मैख़ाना ये कहता है कि ऐवाने-फ़िरंग[17]
सुस्त बुनियाद भी है, आईना दीवार भी है
हुआ न जौर[18] से इसके कोई ग़रीबाँ चाक
अगर्चे माग़्रबियों का जुनूं[19] भी था चालाक
मैख़ाना-ए-यूरोप के दस्तूर निराले हैं
लाते हैं सुरूर अव्वल, देते हैं शराब आख़िर
ख़बर मिली है ख़ुदायाने-बहरो-बर[20] से मुझे
फ़िरंग रहगुज़रे, सैले-बेपनाह में[21] है
अहले-नज़र है यूरोप से नाउम्मीद
इन उम्मतों के बातिन नहीं पाक[22]

---

1. पश्चिमी दासता
2. हुकूमत का छोटा शिकार
3. स्कूलों, विद्यालयों
4. साँस
5. ढीठ, बेहया
6. मौजूदा सभ्यता
7. कारीगरी, फ़नकारी

8. बारीक काम
9. पश्चिमी बुद्धिजीवी
10. युद्धों की तलवार
11. गोरे अंग्रेज़
12. दिल व दृष्टि का पर्दा
13. पश्चिमी स्वर्ग रकाबयुक्त पैरों का ऐश्वर्य है
14. दिल को बहुत भाने वाली
15. आकाश के छोर छूने वाले पक्षी की बुद्धि और बंधन से होकर निकल
16. बंद दिमाग
17. फ़िरंगियों का राज-भवन
18. अत्याचार
19. जुनून, दीवानगी
20. सागर देवता
21. पानी के तेज़ बहाव वाले मार्ग में
22. इन अंग्रेज़ों के दिल पाक-साफ़ नहीं

परिंदे की फ़रियाद

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना
वो बाग़ की बहारें वो सबका चहचहाना
आज़ादियां कहां वो अब अपने घोंसले की
अपनी ख़ुशी से आना अपनी ख़ुशी से जाना
लगती है चोट दिल पर, आता है याद जिस दम
शबनम के आंसुओं पर कलियों का मुस्कराना
वो प्यारी-प्यारी सूरत वो कामनी-सी मूरत
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना

आती नहीं सदाएं उसकी मेरे क़फ़स में
होती मेरी रिहाई ऐ काश! मेरे बस में
क्या बदनसीब हूं मैं घर को तरस रहा हूं
साथी तो हैं वतन में, मैं क़ैद में पड़ा हूं
आई बहार कलियां फूलों की हँस रही हैं
मैं इस अँधेरे घर में क़िस्मत को रो रहा हूं
इस क़ैद का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं
डर है यहीं क़फ़स में मैं ग़म से मर न जाऊं
जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है
गाना इसे समझकर ख़ुश हों न सुनने वाले
दुखते हुए दिलों की फ़र्याद यह सदा है
आज़ाद मुझको कर दे ओ क़ैद करने वाले
मैं बेज़बान क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले

ग़ज़लें

ग़ज़लें

कोई शोख़ी तो देखे जब ज़रा रोना थमा मेरा
कहा बेदर्द ने क्यों आपने माला पिरो ली है
जफ़ाज़ू[1] कह दिया मैंने मगर तुमने बुरा माना
ख़फ़ा क्यों हो गये, यह आशिकों की बोली-ठोली है
शबे-फ़ुर्क़त[2] तसव्वुर[3] था मेरा, एजाज़[4] था, क्या था
तेरी तस्वीर को मैंने बुलाया है तो बोली है
वो मेरी जुस्तजू[5] में फिर रहे हैं, ख़ैर हो या रब
पता मेरा बताने को क़यामत[6] साथ हो ली है
समझ सकता न था कोई मुझे इस बज़्मे-हस्ती[7] में
गिरह थी ज़िन्दगी मेरी अज़ल[8] ने आ के खोली है
महो-ख़ुरशीदो-अंजुम[9] दौड़ते हैं साथ-साथ उसके
फ़लक[10] क्या है, किसी माशूके-बेपरवा की टोली है

गुलज़ारे-हस्तो-बूद[11] न बेगानावार[12] देख
है देखने की चीज़ इसे बार-बार देख
आया है तू जहां में मिसाले-शरार[13] देख
दम दे न जाए हस्ती-ए-नापायदार[14] देख
माना कि तेरी दीद[15] के क़ाबिल नहीं हूं मैं
तू मेरा शौक़ देख, मेरा इन्तज़ार देख

न आते, हमें इसमें तकरार क्या थी
मगर वादा करते हुए आर[16] क्या थी
तुम्हारे पयामी ने सब राज़ खोला
ख़ता[17] इसमें बन्दे की सरकार क्या थी

लाऊँ वो तिनके कहाँ से आशियाने के लिए
बिजलियाँ बेताब हों जिनको जलाने के लिए
वाए[18] नाकामी फ़लक[19] ने ताक कर तोड़ा उसे
मैंने जिस डाली को तोड़ा आशियाने के लिए
दिल में कोई इस तरह की आरज़ू पैदा करूँ
लोट जाये आसमां मेरे मिटाने के लिए
पास[20] था नाकामी-ए-सय्याद[21] का ऐ हमसफ़ीर[22]

वर्ना मैं, और उड़ के आता एक दाने के लिए?

अनोखी वज़अ़[23] है सारे ज़माने से निराले हैं
ये आ़शिक़ कौन-सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं
इलाजे-दर्द में भी दर्द की लज़्ज़त पे मरता हूं
जो थे छालों में कांटे नोके-सोज़ा[24] से निकाले हैं
फला-फूला रहे या रब चमन मेरी उमीदों का
जिगर का ख़ून दे-देकर ये बूटे मैंने पाले हैं
न पूछो मुझसे लज़्ज़त ख़ानुमां-बरबाद[25] रहने की
नशेमन[26] सैकड़ों मैंने बनाकर फूंक डाले हैं
उमीदे-हूर ने सब कुछ सिखा रक्खा है वाइज़ को
ये हज़रत देखने में सीधे-सादे भोले-भाले हैं
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीक़े-राहे-मंज़िल[27] से
ठहर जा ऐ शरर[28]! हम भी तो आख़िर मिटने वाले हैं

महीने वस्ल[29] के घड़ियों की सूरत[30] उड़ते जाते हैं
मगर घड़ियाँ जुदाई की गुज़रती हैं महीनों में
मुझे रोकेगा तू ऐ नाख़ुदा[31]! क्या ग़र्क़ होने से
कि जिनको डूबना है डूब जाते हैं सफ़ीनों[32] में

सरापा[33] हुस्न बन जाता है जिसके हुस्न का आशिक़
भला ऐ दिल! हसीं ऐसा भी है कोई हसीनों में
बुरा समझूँ उन्हें मुझसे तो ऐसा हो नहीं सकता
कि मैं ख़ुद भी तो हूँ 'इक़बाल' अपने नुक्ताचीनों[34] में

तेरे इश्क़ की इन्तिहा चाहता हूं
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूं
सितमी[35] हो कि हो वादा-ए-बेहिजाबी[36]
कोई बात सब्र-आज़मा[37] चाहता हूं
यह जन्नत मुबारिक रहे ज़ाहिदों[38] को
कि मैं आपका सामना चाहता हूं
कोई दम का मेहमां हूं ऐ अहले-महफ़िल
चिराग़े-सहर[39] हूं बुझा चाहता हूं
भरी बज़्म में राज़ की बात कह दी
बड़ा बेअदब हूं, सज़ा चाहता हूं

सख़्तियां करता हूं दिल पर, ग़ैर से ग़ाफ़िल हूं मैं
हाय क्या अच्छी कही ज़ालिम हूं मैं जाहिल हूं मैं
है मेरी ज़िल्लत ही कुछ मेरी शराफ़त की दलील

जिसकी ग़फ़लत को मलक[40] रोते हैं वो ग़ाफ़िल हूं मैं

बज़्मे हस्ती! अपनी आराइश[41] पे तू नाज़ां[42] न हो
तू तो इक तस्वीर है महफ़िल की और महफ़िल हूं मैं
ढूंढ़ता फिरता हूं ऐ 'इक़बाल' अपने-आप को
आप ही गोया मुसाफ़िर आप ही मंज़िल हूं मैं

मजनूं ने शहर छोड़ा तो सहरा भी छोड़ दे
नज़्ज़ारे की हवस[43] है तो लैला भी छोड़ दे
वाइज़[44]! कमाले तर्क[45] से मिलती है यां मुराद
दुनिया जो छोड़ दी है तो उकबा[46] भी छोड़ दे
तक़लीद[47] की रविश[48] से तो बेहतर है ख़ुदकुशी
रस्ता भी ढूँढ़, खिज़्र[49] का सौदा भी छोड़ दे
है आशिक़ी' में रस्म अलग सबसे बैठना
बुतख़ाना भी, हरम भी, कलीसा भी छोड़ दे
सौदागरी नहीं, यह इबादत ख़ुदा की है
ऐ बेख़बर! जज़ा[50] की तमन्ना भी छोड़ दे
अच्छा है दिल के साथ रहे पासबाने-अक़्ल[51]
लेकिन कभी-कभी इसे तनहा भी छोड़ दे

अता हुई है तुझे रोज़ो-शब की बेताबी
ख़बर नहीं कि तू ख़की है या कि सीमाबी[52]
सुना है ख़्वाब से तेरी नुमूद[53] है लेकिन
तिरी सरिश्त[54] में है कोकबी व महताबी
तिरी नवां[55] से है बेपर्दा ज़िन्दगी का ज़मीर[56]
कि तेरे साज़ की फ़ितरत ने की है मिज़राबी

ज़माना देखेगा जब मेरे दिल से महशर[57] उट्ठेगा ग़ुफ़्तगू का
मेरी ख़मोशी नहीं है, गोया मज़ार[58] है हर्फ़े-आरज़ू[59] का
जो मौजे-दरिया लगी यह कहने सफ़र से क़ायम है शान मेरी
गुहर[60] यह बोला सदफ़-नशीनी[61] है मुझको सामान आबरू का
न हो तबीयत ही जिनकी क़ाबिल वो तरबियत में नहीं संवरते
हुआ न सरसब्ज़ रह के पानी में अक़्से-सरु-ए-किनारे-जू[62] का
कोई दिल ऐसा नज़र न आया, न जिसमें ख़्वाबीदा[63] हो तमन्ना
इलाही तेरा जहान क्या है, निगारख़ाना[64] है आरज़ू का
अगर कोई शै नहीं है पिनहां[65] तो क्यों सरापा तलाश हूं मैं
निगह को नज़्ज़ारे की तमन्ना है, दिल को सौदा है जुस्तजू का

यूं तो ऐ बज़्मे-जहां! दिलकश थे हंगामे तेरे

इक ज़रा अफ़सुर्दगी[66] तेरे तमाशाओं में थी
पा गई आसूदगी[67] कू-ए-मोहब्बत[68] में वो ख़ाक
मुद्दतों आवारा जो हिकमत[69] के सहराओं में थी
किस क़दर ऐ मय! तुझे रस्मे-हिजाब[70] आई पसंद
पर्दा-ए अंगूर से निकली तो मीनाओं[71] में थी
हुस्न की तासीर[72] पर ग़ालिब आ सकता था इल्म
इतनी नादानी जहां के सारे दानाओं में थी

मुझे फूंका है सोज़े-क़तरा-ए-अश्के-मोहब्बत[73] ने
ग़ज़ब की आग थी पानी के छोटे से शरारे में
नहीं जिंसे-सवाबे-आख़िरत[74] की आरज़ू मुझको
वो सौदागर हूं, मैंने नफ़अ़ देखा है ख़सारे में
सकूं-नाआशना[75] रहना उसे सामाने-हस्ती[76] है
तड़प किस दिल की या रब छुपके आ बैठी है पारे में

ग़रज़ निशात[77] है शग़ले-शराब से जिनको
हलाल चीज़ को गोया हराम करते हैं
भला निभेगी तेरी हमसे क्योंकर ऐ वाइज़
कि हम तो रस्मे-मोहब्बत[78] को आम करते हैं

मैं उनकी महफ़िले-इशरत[79] से कांप जाता हूं
जो घर को फूंक के दुनिया में नाम करते हैं

ज़माना आया है बेहिजाबी[80] का, आ़म दीदारे-यार[81] होगा
सकूत[82] था पर्दादार जिसका वो राज़ अब आशकार[83] होगा
गुज़र गया अब वो दौरे-साक़ी कि छुपके पीते थे पीने वाले
बनेगा सारा जहान मैख़ाना, हर कोई बादाख़्वार[84] होगा

किया मेरा तज़करा जो साक़ी ने बादाख़्वारों की अंजुमन में
तो पीरे-मैख़ाना[85] सुन के कहने लगा कि मुंहफट है ख़्वार होगा
दियारे-मग़रिब[86] के रहने वालो ख़ुदा की बस्ती दुकां नहीं है
खरा जिसे तुम समझ रहे हो वो अब ज़रे-कम-अयार होगा
तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजर से आप ही ख़ुदकुशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक पे आशियाना बनेगा नापायदार[87] होगा
चमन में लाला[88] दिखाता फिरता है दाग़ अपना कली-कली को
यह जानता है कि इस दिखावे से दिलजलों में शुमार होगा
जो एक था ऐ निगाह! तूने हज़ार करके हमें दिखाया
यही अगर कैफ़ियत[89] है तेरी तो फिर किसे एतबार होगा
ख़ुदा के आशिक़ तो हैं हज़ारों, बनों में फिरते हैं मारे-मारे

मैं उसका बंदा बनूंगा जिसको ख़ुदा के बंदों से प्यार होगा
न पूछ 'इक़बाल' का ठिकाना, अभी वही कैफ़ियत है उसकी
कहीं सरे-रहगुज़ार[90] बैठा सितमकशे-इन्तज़ार[91] होगा

यह मौजे-परेशां-ख़ातिर[92] को पैग़ाम लबे-साहिल[93] ने दिया
है दूर विसाले-बहर[94] अभी, तू दरिया से घबरा भी गई

इज़्ज़त है मोहब्बत की क़ायम ऐ क़ैस[95]! हिजाबे-महमिल[96] से
महमिल जो गया इज़्ज़त भी गई, ग़ैरत भी गई, लैला भी गई
की तर्क तगो-दौ[97] क़तरे ने, तो आबरू-ए-गौहर[98] भी मिली
आवारगी-ए-फ़ितरत[99] भी गई और कश्मकशे-दरिया भी गई
निकली तो लबे-इक़बाल से है क्या जानिये किसकी है यह सदा
पैग़ामे-सुकूं[100] पहुंचा भी गई, दिल महफ़िल का तड़पा भी गई

फिर बादे-बहार[101] आई, 'इक़बाल' ग़ज़लख़्वां[102] हो
ग़ुंचा[103] है अगर गुल हो, गुल हो तो गुलिस्तां हो
तू ख़ाक की मिट्टी है, अजज़ा[104] की हरारत[105] से
बरहम हो, परेशां हो, वुसअत[106] में बयाबां हो

तू जिंसे-मोहब्बत है क़ीमत है गिरां[107] तेरी
कम-माया[108] हैं सौदागर इस देश में अर्ज़ां हो[109]
सामां की मोहब्बत में मुज़मिर[110] है तन-आसानी
मक़सद है अगर मंज़िल, ग़ारतगरे-सामां[111] हो

कभी ऐ हक़ीक़ते-मुन्तज़र[112] नज़र आ लिबासे-मजाज़[113] में
कि हज़ारों सिजदे तड़प रहे हैं मेरी जबीने-नियाज़[114] में
तू बचा-बचा के न रख इसे, तेरा आईना है वो आईना
कि शिकस्ता[115] हो तो अज़ीज़तर[116] है निगाहे-आईनासाज़[117] में
न कहीं जहां में अमां[118] मिली, जो अमां मिली तो कहां मिली
मेरे जुर्मे-ख़ाना-ख़राब को तेरे अफ़्वे-बन्दा-नवाज़[119] में
न वो इश्क़ में रहीं गर्मियां न वो हुस्न में रहीं शोख़ियां
न वो ग़ज़नवी में तड़प रही न वो ख़म[120] है ज़ुल्फ़े-अयाज़[121] में
जो मैं सर-ब-सिजदा[122] हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम-आशना[123] तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

आह दुनिया दिल समझती है जिसे वो दिल नहीं
पहलू-ए-इन्सां में इक हंगामा-ए-ख़ामोश है

हुस्न हो क्या ख़ुदनुमा[124] जब कोई माइल[125] ही न हो
शम्मअ़ को जलने से क्या मतलब, जो महफ़िल ही न हो

अजब वाइज़ की दींदारी[126] है या रब
अदावत है उसे सारे जहां से
कोई अब तक न यह समझा कि इन्सां
कहां जाता है आता है कहां से
बड़ी बारीक हैं वाइज़ की चालें
लरज़[127] जाता है आवाज़े-अज़ां से

बिठा के अ़र्श[128] पे रक्खा है तूने ऐ वाइज़
ख़ुदा वो क्या है जो बंदों से एहतिराज़ करे[129]
मेरी निगाह में वो रिंद[130] ही नहीं साक़ी
जो होशियारी-ओ-मस्ती में इम्तियाज़[131] करे

तेरा ऐ क़ैस, क्योंकर हो गया सोज़े-दरूं[132] ठंडा
कि लैला में तो है अब तक वही अन्दाज़े-लैलाई

हैं जज़्बा-बाहमी[133] से क़ायम निज़ाम[134] सारे
पोशीदा[135] है यह नुक़्ता तारों की ज़िन्दगी में

1. ज़ालिम
2. जुदाई की रात
3. कल्पना
4. चमत्कार
5. तलाश
6. प्रलय
7. संसार
8. मृत्यु
9. चाँद, सूरज, तारे
10. आकाश
11. अस्तित्व की वाटिका (संसार) को
12. उदासीन दृष्टि से
13. चिंगारी की तरह
14. नश्वर जीवन
15. दर्शन
16. दोष (लज्जा)
17. क़सूर
18. अफ़सोस
19. आकाश (प्रारब्ध)
20. ख़याल

21. शिकारी की असफलता
22. साथी
23. रंग-ढंग
24. सुई की नोक
25. नष्ट घर में
26. नीड़
27. सहयात्री
28. चिंगारी
29. मिलन
30. तरह
31. मांझी
32. नौकाओं में
33. सिर से पैर तक
34. आलोचकों
35. अत्याचार
36. पर्दा हटाने का वादा
37. धैर्य को आज़माने वाली
38. संयमियों
39. प्रभात-दीपक
40. फ़रिश्ते
41. श्रृंगार
42. घमंडी
43. आकांक्षा
44. धर्मोपदेशक
45. पूर्ण त्याग
46. परलोक
47. अनुकरण
48. विधि
49. पथ-प्रदर्शक
50. प्रतिफल
51. बुद्धिरूपी रक्षक
52. खाक या मिट्टी से बनी है या पारे से
53. उत्पत्ति
54. खाते या ख़ाने में
55. आवाज़
56. अंतरात्मा
57. प्रलय (क़ब्रों में से मुर्दे उठने का दिन)
58. क़ब्र
59. आकांक्षाओं
60. मोती
61. सीपी में रहना
62. नदी किनारे के सर्व (वृक्ष) की परछाई
63. सोई हुई
64. चित्रशाला
65. गुप्त
66. उदासी

67. सम्पन्नता, तुष्टि
68. प्रेम की गली
69. दर्शन
70. पर्दे में रहने की प्रथा
71. मद्य रखने का पात्र
72. प्रभाव
73. प्रेम की बही हुई आँसू की बूंद की तपिश
74. पुण्य द्वारा परलोक में मिलने वाली वस्तुओं
75. शान्ति से अनभिज्ञ (अशान्त)
76. जीवन का साधन
77. आनन्द
78. प्रेम-कथा
79. ऐश्वर्य-विलास की महफ़िल
80. आवरण उठाने का
81. प्यारे के दर्शन
82. चुप्पी
83. प्रकट
84. शराबी
85. शराबख़ाने का स्वामी
86. पश्चिमी देशों
87. क्षणभंगुर
88. एक फूल का नाम
89. स्थिति
90. मार्ग में
91. प्रतीक्षा का मारा हुआ
92. व्याकुल लहर
93. तट
94. समुद्र से मिलन
95. लैला का आशिक़ (मजनूं)
96. ऊँट पर कसने का कजावा, जिसमें परदा डालकर स्त्रियाँ बैठती हैं
97. दौड़-धूप छोड़ दी
98. मोती की प्रतिष्ठा
99. भटकने की प्रकृति
100. शान्ति का सन्देश
101. वसन्त ऋतु की हवा
102. गीत गाओ
103. कली
104. तत्वों
105. गर्मी
106. फैलाव
107. महँगी
108. थोड़ी पूँजी वाले
109. रास्ता
110. निहित
111. सामान को नष्ट करने वाला
112. एक प्रतीक्ष्य ईश्वरीय प्रेम

113. अवास्तविक अर्थात् सांसारिक प्रेम के लिबास में
114. प्रेमी का माथा
115. टूट जाए
116. अधिक प्रिय
117. आईना बनाने वाले की नज़र
118. पनाह
119. क्षमाशीलता तथा कृपा
120. पेच
121 अयाज़ (ग़ज़नवी का प्रिय दास)
122. ईश्वर के सम्मुख नतमस्तक
123. बुतों का उपासक
124. आत्मप्रदर्शक
125. आकृष्ट (प्रशंसक)
126. धार्मिकता
127. कांप
128. आकाश-सिंहासन
129. परहेज़ करे
130. मद्यप
131. भेद-भाव
132. प्रेम की ज्वाला
133. पारस्परिक मेल-मिलाप
134. व्यवस्थाएँ
135. निहित

हास्य-रस

मशरिक़ में उसूले-दीन[1] बन जाते हैं
मग़रिब में मगर मशीन बन जाते हैं
रहता नहीं एक भी हमारे पल्ले
वां एक के तीन-तीन बन जाते हैं

शैख़ साहब भी तो परदे के कोई हामी नहीं
मुफ़्त में कालिज के लड़के उनसे बदज़न हो गये
वाज़[2] में फ़र्मा दिया कल आपने यह साफ़-साफ़
पर्दा आख़िर किससे हो जब मर्द ही ज़न[3] हो गये

तालीमे-मग़रिबी है बहुत जुरअत-आफ़रीं[4]
पहला सबक़ है बैठ के कालेज में मार डींग
बसते हैं हिन्द में जो ख़रीदार ही फ़क़त
आग़ा[5] भी ले के आते हैं अपने वतन से हींग
मेरा यह हाल, बूट की 'टो' चाटता हूं मैं
उनका यह हुक्म देख! मेरे फ़र्श पर न रींग

थे वो भी दिन कि ख़िदमते-उस्ताद[6] के एवज़[7]
दिल चाहता था हदिया-ए-दिल[8] पेश कीजिये
बदला ज़माना ऐसा कि लड़का पस-अज़ सबक़[9]
कहता है मास्टर से कि 'बिल पेश कीजिए'

इन्तिहा भी इसकी है आख़िर ख़रीदें कब तलक
छतरियां, रुमाल, मफ़लर, पैरहन जापान से
अपनी ग़फ़लत[10] की यही हालत अगर क़ायम रही
आयेंगे ग़स्साल[11] काबुल से, कफ़न जापान से

हम मशरिक़ के मसकीनों[12] का दिल मग़रिब में जा अटका है
वां कंटर सब बिल्लौरी हैं यां एक पुराना मटका है

इस दौर में सब मिट जायेंगे, हां बाक़ी वो रह जायेगा
जो क़ायम अपनी राह पे है और पक्का अपनी हट का है
यां बाहम प्यार के जलसे थे, दस्तूरे-मोहब्बत क़ायम था
यां बहस में उर्दू-हिन्दी है यां कुरबानी या झटका है

वो मिस बोली इरादा ख़ुदकुशी का जब किया मैंने
मुहज़्ज़ब[13] है तू ऐ आशिक़! क़दम बाहर न धर हद से

न जुरअत है, न ख़ंजर है, तो क़सदे-ख़ुदकुशी[14] कैसा
यह माना दर्दे-नाकामी गया तेरा गुज़र हद से
कहा मैंने कि ऐ जाने-जहां[15] कुछ नक़द दिलवा दो
किराये पर मंगा लूंगा कोई अफ़ग़ान सरहद से

मेम्बरी इम्पीरियल कौंसिल की कुछ मुश्किल नहीं
वोट तो मिल जायेंगे पैसे भी दिलवायेंगे क्या?
मीरज़ा 'ग़ालिब' ख़ुदा बख़्शे, बजा फ़र्मा गये
हमने यह माना कि दिल्ली में रहें, खायेंगे क्या?

रात मच्छर ने कह दिया मुझसे
माजरा अपनी नातमामी का
मुझको देते हैं एक बूंद लहू
सिला[16] शब-भर की तश्नाकामी[17] का
और यह बस्वादार बे-ज़हमत[18]
पी गया सब लहू असामी का

जान जाये हाथ से जाये न सत
है यही इक बात हर मज़हब का तत
चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं
साहूकारी, बिस्वादारी, सल्तनत

सुना है मैंने कल यह गुफ़्तगू थी कारख़ाने में
पराये झोंपड़ों में है ठिकाना दस्तकारों का
मगर सरकार ने क्या ख़ूब कौंसिल-हॉल बनवाया
कोई इस शहर में तकिया[19] न था सरमायादारों का

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत[20] वालों ने

मन अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका
तर आंखें तो हो जाती हैं पर क्या लज़्ज़त[21] इस रोने में
जब ख़ूने-जिगर[22] की आमेज़िश[23] से अश्क[24] पियाज़ी[25] बन न सका
'इक़बाल' बड़ा उपदेशक है मन बातों में मोह लेता है
गुफ़्तार[26] का यह ग़ाज़ी[27] तो बना किरदार[28] का ग़ाज़ी बन न सका

---

1. धर्म के नियम
2. धर्मोपदेश
3. स्त्रियाँ
4. साहस के लिए प्रशंसनीय
5. पठान
6. गुरुसेवा
7. बदले में
8. दिल की भेंट
9. पाठ लेने के बाद
10. लापरवाही
11. मुर्दे को नहलाने वाले
12. निवासियों
13. सभ्य
14. आत्महत्या का संकल्प
15. संसार के प्राण (प्रेयसी)
16. पारितोषिक
17. पिपासा
18. बिना किसी कष्ट, चेष्टा के
19. ठिकाना (सहारा)
20. जिनके मन में धर्म का उग्र प्रेम था
21. आनन्द
22. हृदय-रक्त
23. मिश्रण
24. आँसू
25. गुलाबी
26. वार्ता
27. धर्मयोद्धा
28. आचरण, कर्म, चरित्र

दर्शन-सम्बन्धी

तेरे शीशे[1] में मय बाक़ी नहीं है
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है
समन्दर से मिले प्याले को शबनम[2]
बख़ीली[3] है यह रज़्ज़ाक़ी[4] नहीं है

अगर कजरौ[5] हैं अंजुम[6], आस्मां तेरा है या मेरा
मुझे फ़िक्रे-जहां[7] क्यों हो, जहाँ तेरा है या मेरा
मोहम्मद भी तेरा जिब्रील[8] भी क़ुरआन भी तेरा
मगर यह हर्फ़े-शीरीं[9] तर्जुमां[10] तेरा है या मेरा

गेसू-ए-ताबदार[11] को और भी ताबदार कर
होशो-ख़िरद[12] शिकार कर क़ल्बो-नज़र[13] शिकार कर
इश्क़ भी हो हिजाब[14] में, हुस्न भी हो हिजाब में
या तो ख़ुद आशकार[15] हो या मुझे आशकार कर

तू है मुहीते-बेकरां[16], मैं हूं ज़रा-सी आबे-जू[17]
या मुझे हमकिनार[18] कर, या मुझे बेकिनार[19] कर
बाग़े-बहिश्त से मुझे हुक्मे-सफ़र दिया था क्यों
कारे-जहां[20] दराज़[21] है अब मेरा इन्तज़ार कर
रोज़े-हिसाब[22] जब मेरा पेश हो दफ़्तरे-अ़मल[23]
आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर

मेरी जफ़ा-तलबी[24] को दुआयें देता है
वो दश्ते-सादा[25] वो तेरा जहाने-बेबुनियाद
ख़तरपसंद[26] तबीयत को साज़गार[27] नहीं
वो गुलिस्तां कि जहाँ घात में न हो सय्याद[28]
मुक़ामे-शौक़[29] तेरे क़ुदसियों[30] के बस का नहीं
उन्हीं का काम है यह जिनके हौसले हैं ज़ियाद

क्या इश्क़ एक ज़िन्दगी-ए-मुस्तआ़र[31] का

क्या इश्क़ पायदार[32] से नापायदार[33] का
वो इश्क़ जिसकी शम्मअ़ बुझा दे अज़ल[34] की फूंक
उसमें मज़ा नहीं तपिशो-इन्तज़ार[35] का
मेरी बिसात[36] क्या है ताबो-ताबे-यक-नफ़स[37]
शो'ले से बेमहल[38] है उलझना शरार[39] का
कर पहले मुझको ज़िन्दगी-ए-जाविदां[40] अ़ता[41]
फिर ज़ौक़-ओ-शौक़ देख दिले-बेक़रार का

दिगरगूं[42] है जहां तारों की गर्दिश तेज़ है साक़ी
दिल हर ज़र्रा में ग़ोग़ा-ए-रस्ताख़ेज़[43] है साक़ी
मताअ़-ए-दीन-ओ-दानिश[44] लुट गई अल्लाह वालों की
यह किस काफ़िर-अदा[45] का ग़मज़हे-ख़ूंरेज़[46] है साक़ी
वही देरीना[47] बीमारी, वही नामहकमी[48] दिल की
इलाज उसका वही आबे-निशात-अंगेज़[49] है साक़ी
नहीं है नाउमीद 'इक़बाल' अपनी किश्ते-वीरां[50] से
ज़रा नम हो तो यह मिट्टी बड़ी ज़रख़ेज़ है साक़ी

परेशां होके मेरी ख़ाक आख़िर दिल न बन जाये
जो मुश्किल अब है या रब फिर वही मुश्किल न बन जाये

कभी छोड़ी हुई मंज़िल भी याद आती है राही को
खटक-सी है जो सीने में ग़मे-मंज़िल न बन जाये
बनाया इश्क़ ने दरिया-ए-नापेदाकरां[51] मुझको
यह मेरी ख़ुद-निगहदारी[52] मेरी साहिल न बन जाये
उरूज़े-आदमे-ख़ाकी[53] से अंजुम[54] सहमे जाते हैं
कि यह टूटा हुआ तारा महे-कामिल[55] न बन जाये

मताअ़-ए-बेबहा[56] है दर्दो-सोज़े-आरज़ू मंदी
मक़ामे-बंदगी[57] देकर न लूं शाने-ख़ुदावंदी
यहां मरने की पाबंदी, वहां जीने की पाबंदी
मेरी मश्शातगी[58] की क्या ज़रूरत हुस्ने-मानी[59] को
कि फ़ितरत ख़ुद-ब-ख़ुद करती है लाले की हिनाबंदी[60]

ख़िरद[61] वाक़िफ़ नहीं है नेको-बद से
बढ़ी जाती है ज़ालिम अपनी हद से

ख़ुदा जाने मुझे क्या हो गया है
ख़िरद बेज़ार दिल से, मैं ख़िरद से

अपनी जौलांगाह[62] ज़ेरे-आस्मां[63] समझा था मैं
'आबो-गिल[64] के खेल को अपना जहां समझा था मैं
बेहिजाबी[65] से तेरी टूटा निगाहों का तिलिस्म[66]
इक रिदा-ए-नीलगूं[67] को आस्मां समझा था मैं
कारवां थककर फ़ज़ा[68] के पेचो-ख़म में रह गया
मेहरो-माहो-मुश्तरी[69] को हमइना[70] समझा था मैं
इश्क़ की इक जस्त[71] ने तै कर दिया क़िस्सा तमाम
इस ज़मीनो-आस्मां को बेकरां[72] समझा था मैं
थी किसी दरमांदा-रहरौ[73] की सदा-ए-दर्दनाक[74]
जिसको आवाज़े-रहीले-कारवां[75] समझा था मैं

समा सकता नहीं पहना-ए-फ़ितरत[76] में मेरा सौदा[77]
ग़लत था ऐ जुनूं[78] शायद तेरा अंदाज़ा-ए-सहरा[79]

ख़ुदी[80] से इस तिलिस्मे-रंगो-बू[81] को तोड़ सकते हैं
यही तौहीद[82] थी जिसको न तू समझा न मैं समझा
निगह[83] पैदा कर ऐ ग़ाफ़िल! तजल्ली[84] ऐन फ़ितरत[85] है
कि अपनी मौज[86] से बेगाना रह सकता नहीं दरिया

बहुत देखे हैं मैंने मशरिक़ो-मग़रिब के मैख़ाने
यहां साक़ी नहीं पैदा वहां बेज़ौक़ है सहबा[87]

हुज़ूरे-हक़ में[88] इसराफ़ील[89] ने मेरी शिकायत की
यह बंदा वक़्त से पहले क़यामत कर न दे बर्पा

वही है साहिबे-इमरोज़[90] जिसने अपनी हिम्मत से
ज़माने के समन्दर से निकाला गौहरे-फ़र्दा[91]

हुस्ने-बेपरवा को अपनी बेनक़ाबी के लिए
हों अगर शहरों से बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन
अपने मन में डूब कर पा जा सुराग़े-ज़िन्दगी[92]
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन
मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं
तन की दौलत छांव है आता है धन जाता है धन

मन की दुनिया में न पाया मैंने अफ़रंगी का राज़
मन की दुनिया में न देखे मैंने शैख़-ओ-बिरहमन
पानी-पानी कर गई मुझको क़लन्दर की यह बात
तू झुका जब ग़ैर के आगे न मन तेरा न तन

अक़्ल गो आस्तां[93] से दूर नहीं
उसकी तक़दीर में हुज़ूर[94] नहीं
दिले-बीना[95] भी कर ख़ुदा से तलब
आंख का नूर दिल का नूर नहीं
इल्म में भी सरूर है लेकिन
यह वो जन्नत है जिसमें हूर नहीं
इक जुनूं[96] है कि बाशऊर[97] भी है
इक जुनूं है कि बाशऊर नहीं
नासुबूरी[98] है ज़िन्दगी दिल की
आह! वो दिल कि नासुबूर नहीं
बेहुज़ूरी है तेरी मौत का राज़
ज़िन्दा हो तू तो बेहुज़ूर नहीं
हर गुहर[99] ने सदफ़[100] को तोड़ दिया
तू ही आमादा-ए-ज़हूर[101] नहीं

ये पयाम दे गई है मुझे बादे-सुबहगाही[102]
कि ख़ुदी के आ़रिफ़ों[103] का है मक़ाम पादशाही
तेरी ज़िन्दगी इसी से, तेरी आबरू इसी से
जो रही ख़ुदी तो शाही, न रही तो रूसियाही[104]
न दिया निशाने-मंज़िल मुझे ऐ हकीम[105] तूने
मुझे क्या गिला हो तुझसे तू न रहनशीं[106] न राही

ख़िरद[107] के पास ख़बर के सिवा कुछ और नहीं
तेरा इलाज नज़र के सिवा कुछ और नहीं
हर इक मक़ाम से आगे मक़ाम है तेरा
हयात ज़ौक़े-सफ़र के सिवा कुछ और नहीं

न तू ज़मीं के लिए है न आस्मां के लिए
जहां है तेरे लिए तू नहीं जहां के लिए
रहेगा रावी-ओ-नील-ओ-फ़रात[108] में कब तक
तेरा सफ़ीना[109] कि है बहरे-बेकरां[110] के लिए
ज़रा-सी बात थी अन्देशा-ए-अज़म[111] ने उसे
बढ़ा दिया है फ़क़त ज़ेबे-दास्तां[112] के लिए

न बादा[113] है न सुराही न दौरे-पैमाना
फ़क़त निगाह से रंगीं है बज़्मे ज़नाना[114]

वो बंदगी ख़ुदाई, वो बंदगी गदाई[115]
या बंदाए-ख़ुदा बन या बंदा-ए-ज़माना
ग़ाफ़िल न हो, ख़ुदी से कर अपनी पासबानी[116]
शायद किसी हरम[117] का तू भी है आस्ताना[118]

हुई न आम जहां में कभी हुकूमते-इश्क़
सबब यह है कि मोहब्बत ज़मानासाज़ नहीं

फ़ारिग़ तो न बैठेगा महशर[119] में जुनूं[120] मेरा
या अपना गिरेबां चाक या दामने-यज़दां[121] चाक

यहीं बहिश्त भी है हूरो-जिब्रील[122] भी हैं
तेरी निगह में अभी शोख़ी-ए-नज़ारा नहीं

तेरी बन्दापरवरी से मेरे दिन गुज़र रहे हैं
न गिला है दोस्तों का न शिकायते-ज़माना

ऐ तायरे-लाहूती[123] उस रिज़्क़[124] से मौत अच्छी
जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़[125] में कोताही[126]

मुझे आहो-फ़ुग़ाने-नीमशब[127] का फिर पयाम आया
थम ऐ रहरौ[128] कि शायद फिर कोई मुश्किल मक़ाम आया
ज़रा तक़दीर की गहराइयों में डूब जा तू भी
कि इस जंगाह[129] से मैं बन के तेग़े-बेनियाम[130] आया
यह मिसरा[131] लिख दिया किस शोख़ ने महराबे-मस्जिद पर
ये नादां गिर गये सिजदों में जब वक़्ते-क़याम[132] आया
चल ऐ मेरी ग़रीबी का तमाशा देखने वाले
वो महफ़िल उठ गई जिस दम कि मुझ तक दौरे-जाम आया

यक़ीं पैदा कर ऐ नादां, यक़ीं से हाथ आती है
वो दरवेशी[133] कि जिसके सामने झुकती है फ़ग़फ़ूरी[134]
हदे-इदराक[135] से बाहर हैं बातें इश्क़ो-मस्ती की
समझ में इस क़दर आया कि दिल की मौत है दूरी

उस मौज के मातम में रोती है भंवर की आंख

दरिया से उठी लेकिन साहिल से न टकराई

सितारों से आगे जहां और भी हैं
अभी इश्क़ के इम्तिहां और भी हैं
तिही[136] ज़िन्दगी से नहीं ये फ़ज़ायें[137]
यहां सैकड़ों कारवां और भी हैं
अगर खो गया इक नशेमन[138] तो क्या ग़म
मक़ामाते-आहो-फ़ुग़ां[139] और भी हैं
तू शाहीं[140] है, परवाज़[141] है काम तेरा
तेरे सामने आस्मां और भी हैं
इसी रोज़ो-शब[142] में उलझकर न रह जा
कि तेरे ज़मानो-मकां[143] और भी हैं
गये दिन कि तनहा था मैं अंजुमन में
यहां अब मेरे राज़दां[144] और भी हैं

मीरी[145] में, ग़रीबी में, शाही में, ग़ुलामी में
कुछ काम नहीं बनता बेजुरअत-ए-रिन्दाना[146]

साहिबे-साज़[147] को लाज़िम है कि ग़ाफ़िल न रहे
गाहे-गाहे[148] ग़लतआहंग[149] भी होता है सुरोश[150]

इश्क़ तेरी इंतिहा, इश्क़ मेरी इंतिहा
तू भी अभी नातमाम मैं भी अभी नातमाम

उसकी ख़ुदी[151] है अभी शामो-सहर[152] में असीर[153]
गर्दिशे-दौरां[154] का है जिसकी ज़बान पर गिला

ज़ुलमे-बहर[155] में खोकर संभल जा
तड़प जा, पेच खा-खाकर बदल जा
नहीं साहिल तेरी क़िस्मत में ऐ मौज[156]
उभरकर जिस तरह चाहे निकल जा

तेरे सीने में दम है दिल नहीं है
तेरा दम गर्मी-ए-महफ़िल नहीं है
गुज़र जा अक़्ल से आगे कि यह नूर

चिराग़े-राह है मंज़िल नहीं है

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी
यह ख़ाकी[157] अपनी फ़ितरत[158] में न नूरी[159] है न नारी[160] है

आग बुझी हुई इधर, टूटी हुई तनाब उधर
क्या ख़बर इस मक़ाम से गुज़रे हैं कितने कारवां

हर ज़ायरे-चमन से[161] कहती है ख़ाके-पाक
ग़ाफ़िल न रह जहाँ में गर्दूं[162] की चाल से

सींचा गम है ख़ूने-शहीदाँ से इसका तुख़्म[163]
तू आंसुओं का बुख़्ल[164] न कर इस निहाल से-[*]

---

1. बोतल
2. एक बूंद अर्थात् बहुत कम
3. कंजूसी
4. जीविका प्रदान करना
5. टेढ़े चलने वाले
6. सितारे
7. संसार की चिन्ता
8. रहमत का फ़रिश्ता
9. मीठा बोल
10. अनुवादक (प्रस्तुतकर्ता)
11. चमकीले केशों
12. बुद्धि
13. मन, मस्तक
14. आवरण
15. प्रकट
16. अथाह सागर
17. छोटी नदी
18. अपने से मिला ले
19. विशाल (बेकिनारा)
20. संसार के काम
21. लम्बे
22. प्रलय के बाद का वह दिन जब मनुष्य अपने कर्मों का हिसाब भगवान को देगा
23. कर्मों का पोथा
24. अत्याचार सहने की शक्ति
25. सादा जंगल
26. ख़तरों को पसन्द करने वाली

27. अनुकूल
28. शिकारी
29. मंज़िल पर पहुँचना
30. फ़रिश्तों
31. मांगे का जीवन
32. अमर
33. नश्वर
34. मृत्यु
35. जलने और प्रतीक्षा करने
36. अस्तित्व
37. एक श्वास की चमक और गर्मी
38. व्यर्थ
39. चिंगारी
40. अमर जीवन
41. प्रदान
42. परिवर्तित
43. प्रलय का शोर
44. बुद्धि तथा धर्म की पूँजी
45. चंचल सुन्दरी
46. रक्त बहाने वाला कटाक्ष
47. पुरानी
48. दुर्बलता
49. आनन्ददायक जल (शराब)
50. उजड़ा खेत
51. ऐसी नदी जिसका किनारा नहीं (विशाल)
52. आत्मरक्षा
53. धरती पर रहने वाले मनुष्य के उत्थान
54. सितारे
55. पूरा चाँद
56. अमूल्य पूँजी
57. भक्ति-स्थान
58. श्रृंगार
59. विश्व-सौन्दर्य
60. मेहँदी रचाना
61. बुद्धि
62. घूमने-फिरने की जगह
63. आकाश के नीचे
64. पानी-मिट्टी
65. परदा हटने से
66. जादू
67. नीली चादर
68. शून्य
69. सूरज, चाँद तथा बृहस्पति तारा
70. सहगामी
71. छलाँग
72. अथाह

73. दुःखी पथिक
74. दर्दभरी आवाज़
75. कारवां के गुज़रने की लोचदार आवाज़
76. प्रकृति की विशालता
77-78. उन्माद
79. मरुस्थल (संसार) की विशालता का अनुमान
80. अहंभाव
81. रंग तथा सुगंधि का जादू अर्थात् संसार
82. एकेश्वरवाद
83. नज़र
84. आलोक, दीप्ति
85. मानव-प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल
86. लहर
87. सुरा
88. भगवान से
89. एक फ़रिश्ता जो प्रलय के दिन शंख बजाकर घोषणा करेगा
90. आज (समय) का बादशाह
91. आनेवाले कल का मोती (कल को पहचान लिया)
92. जीवन का भेद
93. चौखट (दहलीज़)
94. भगवान
95. देखने वाला दिल (पारखी)
96. उन्माद
97. विवेकपूर्ण
98. बेसब्री
99. मोती
100. सीपी
101. प्रत्यक्ष रूप से सामने आने के लिए तैयार
102. सुबह की हवा
103. पहचाननेवालों
104. मुँह काला होगा
105. दार्शनिक
106. रास्ते में रहने वाला
107. बुद्धि
108. नदियों के नाम (अर्थात् सीमाओं में)
109. नाव
110. अथाह सागर
111. उन लोगों की शंका ने, जो अरब-निवासी (धार्मिक) नहीं हैं
112. कथा को सुन्दर बनाने
113. शराब
114. प्रेयसी की बैठक (संसार)
115. फ़कीरी
116. रक्षा
117. काबे के इर्द-गिर्द का प्रान्त (पवित्र स्थान)
118. दहलीज़
119. वह दिन जब ख़ुदा सबका न्याय करेगा

120. उन्माद
121. ख़ुदा का दामन
122. एक फ़रिश्ता
123. शून्य (आकाश) में उड़ने वाले पक्षी
124. रोटी (दाना)
125. उड़ान
126. कमी
127. आधी रात में भरी गई आहों का
128. पथिक
129. युद्धभूमि
130. नंगी तलवार
131. पंक्ति
132. रुकने का समय
133. फ़क़ीरी
134. बादशाही (फ़ग़फ़ूर—चीन के प्राचीन बादशाहों के नाम)
135. बुद्धि की सीमा
136. ख़ाली
137. वातावरण
138. नीड़
139. आर्तनाद के लिए स्थान (अवसर)
140. बाज़ पक्षी
141. उड़ना
142. दिन-रात (संसार)
143. संसार
144. भेदी
145. अमीरी
146. उन्मादपूर्ण साहस के बिना
147. साज़ वाले
148. कभी-कभी
149. ग़लत इरादा लिए
150. अच्छा सन्देश लाने वाला फ़रिश्ता
151. अहंभाव
152. सुबह-शाम
153. बन्दी
154. संसार-चक्र
155. समुद्र के अँधेरे में (गहराइयों में)
156. लहर
157. मिट्टी का पुतला (मनुष्य)
158. प्रकृति
159. दैवी
160. नारकीय
161. बाग के हरेक आने वाले से
162. आसमान
163. बीज
164. कंजूसी– [*] ये शे'र इकबाल की किसी कृति में नहीं मिलते। माना जाता है कि जलियांवाला बाग की घटना